वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 144
ISBN 978-93-80353-53-1

चौंसठ ऋद्धि विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष 2012-2013 के अन्तर्गत पूज्य माताजी के 58वें आर्यिका दीक्षा दिवस अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 292943
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

आठवाँ संस्करण	वीर नि. सं. 2536	मूल्य
1100 प्रतियाँ	आश्विन शुक्ला 15	20/-रु.

22 अक्टूबर 2010, शरदपूर्णिमा

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण (सन् 1995)-2200 प्रतियाँ, द्वितीय संस्करण (सन् 1999)-2200 प्रतियाँ, चतुर्थ संस्करण (सन् 2005)-1100 प्रतियाँ, पंचम संस्करण (सन् 2007)-1100 प्रतियाँ, छठा संस्करण (सन् 2008)-2200 प्रतियाँ, सप्तम संस्करण (सन् 2010)-2200 प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

संसारी प्राणियों को धर्म में लगाने के लिए, उनकी रुचि धर्म के प्रति अधिक जागृत करने के लिए मण्डल विधान भी एक माध्यम है। परमपूज्य गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने ऐसे एक नहीं अनेकों विधान अपनी कलम से लिखे हैं जैसे–इन्द्रध्वज विधान, कल्पद्रुम विधान, सर्वतोभद्र महामण्डल विधान, सिद्धचक्र विधान, तीन लोक विधान, जम्बूद्वीप विधान, पंचपरमेष्ठी विधान, शांति विधान, जिनगुणसम्पत्ति आदि अनेकों विधान हैं।

इन्हीं विधानों की शृँखला में प्रकाशित इस चौंसठ ऋद्धि विधान में गणधरों की चौंसठ ऋद्धियों की पूजा है। जब भगवान की दिव्यध्वनि खिरती है, तब उस दिव्यध्वनि को धारण करने वाले उनके शिष्य गणधर ही होते हैं और वे गणधर गुरु सम्पूर्ण ऋद्धियों के स्वामी होते हैं इनकी अर्चना, वंदना सभी मुनि, देवता, चक्रवर्ती, बारह सभाओं के सभी प्राणी, असंख्य भव्य करते हैं।

विधान के मंगलाचरण में यह सभी भाव विद्यमान हैं। पश्चात् चौबीस तीर्थंकर पूजा में चतुर्विंशति तीर्थंकर के समस्त गणधरों की और समस्त मुनियों की सभी संख्या भी आ गई है। प्रत्येक तीर्थंकर के काल में कितने और कौन से प्रमुख गणधर हुए हैं यह भी दर्शाया गया है।

इन ऋद्धियों के प्रभाव से सभी रोग, शोक, दुःख दूर हो जाते हैं। पाणिपात्र में आया हुआ विष भी अमृत बन जाता है। विघ्न बाधाएं टल जाती हैं। चौंसठ ऋद्धि पूजा में चौंसठ ऋद्धियों के नाम और उनका फल स्पष्ट रूप में समझ में आ जाता है। ऋद्धि के आठ भेद हैं और इनके उत्तर भेद अनेक हैं।

(1) बुद्धि ऋद्धि–यह 18 प्रकार की है।
(2) चारण ऋद्धि–यह 9 प्रकार की है।
(3) बलऋद्धि–यह 3 प्रकार की है।
(4) रसऋद्धि–यह 6 प्रकार की है।
(5) विक्रिया ऋद्धि–यह 11 प्रकार की है।
(6) तपऋद्धि–यह 7 प्रकार की है।
(7) औषधि ऋद्धि–यह 8 प्रकार की है।
(8) अक्षीणऋद्धि–यह 2 प्रकार की है।

इन सभी को मिलाकर ये 64 ऋद्धियाँ हो जाती हैं। इस विधान में इन्हीं चौंसठ ऋद्धियों के अर्घ्य पूज्य माता जी ने अत्यन्त सरल, स्पष्ट और सुन्दर छंदों में माला की मणि के समान पिरोए हैं। इसी विक्रिया ऋद्धि के बल पर श्री विष्णुकुमार मुनि ने अकंपनाचार्यादि 700 मुनियों का उपसर्ग दूर किया था, जिसे माताजी ने विक्रिया ऋद्धि के भेद में लिखा है–

'मेरु बराबर देह, विक्रिय से जो करते।
महिमा ऋद्धि समेत, तप बल से ही बनते।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, बनूँ जगत् हितकारी।।2।।

अक्षीण महानस ऋद्धि का माहात्म्य भी अपूर्व है–

कहे ऋद्धि अक्षीण के भेद दो हैं। मुनी लेंय आहार जिस गेह में हैं।।
भले चक्रवर्ती कटकजीम लेवें। जजूँ ऋद्धि जिससे नहिं अन्न छीवे।।

इन विधानों को करने से, ध्यानपूर्वक पढ़ने-सुनने से स्वाध्याय का भी लाभ मिल जाता है। तत्त्वार्थराजवार्तिक ग्रंथ में इन सभी ऋद्धियों का वर्णन आता है।

पूज्य माताजी की समस्त कृतियाँ एक से बढ़कर एक हैं। माताजी के किसी भी ग्रंथ को उठाकर देखें तो उन सभी में आगम का पूरा सार भरा पड़ा है। ऐसा लगने लगता है मानों साक्षात् सरस्वती देवी ही आकर इन ग्रंथों को लिख गई हों। ऐसी महान विदुषी पूज्य माताजी की छत्रछाया सदैव हम सभी पर बनी रहे, यही जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना है।

आद्य वक्तव्य

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ में गणधर देवों की संख्या बतलाकर पुनः चौंसठ प्रकार की ऋद्धियों का सुंदर विवेचन किया गया है।[1] यथा–

ये सभी गणधरदेव आठ ऋद्धियों से सहित होते हैं। उनके नाम बुद्धि, विक्रिया, क्रिया, तप, बल, औषधि, रस और क्षेत्र। इनके उत्तर भेद चौंसठ हैं।

यहाँ चौंसठ ऋद्धि विधान में प्रत्येक अर्घ्य में मैंने किंचित्-किंचित् अर्थ उसी तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के आधार से लिया है। इन ऋद्धियों का अर्थ समझकर मन में अतिशय आल्हाद उत्पन्न होता है।

इन ऋद्धियों का वर्णन निम्न प्रकार है–

बुद्धिऋद्धि 18, विक्रियाऋद्धि 11, चारणऋद्धि 9, तपऋद्धि 7, बलऋद्धि 3, औषधिऋद्धि 8, रसऋद्धि 6 और अक्षीणऋद्धि 2, ऐसे 18+11+9+7+3+8+6+2=64 ये चौंसठ ऋद्धियाँ हैं।

इस विधान में सर्वप्रथम गणधर और मुनिगण सहित चौबीस तीर्थंकरों की पूजा है पुनः चौंसठ ऋद्धि की समुच्चय पूजा है। अनंतर क्रम से आठों ऋद्धियों की आठ पूजाएँ हैं। इनमें क्रम से 18, 11 आदि अर्घ्य हैं। इस प्रकार इस विधान में दश पूजाएँ हैं। 24+64=88 अर्घ्य हैं। 9 पूर्णार्घ्य हैं और दश जयमालाएँ हैं।

इस विधान में निम्नलिखित छंदों के प्रयोग किये गये हैं–

1. शेरछंद 2. गीता 3. भुजंगप्रयात 4. सोरठा 5. दोहा 6. नरेन्द्र 7. शंभुछंद 8. त्रिभंगी 9. स्रग्विणी छंद 10. चौबोल 11. बसंततिलका 12. घत्ता 13. अडिल्लछंद 14. नाराच 15. रोला 16. पद्धड़ीछंद 17. चाल नंदीश्वर पूजा 18. लक्ष्मीधरा 19. चौपाई 20. कुसुमलता 21. तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें।

इन चौंसठ ऋद्धियों में अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञान को भी ऋद्धि में लिया है तथा पादानुसारी, संभिन्नश्रोतृत्व आदि ऋद्धियाँ कौतुकपूर्ण हैं।

आज ऐसे अनेक पौद्गलिक चमत्कार देखने को मिलते हैं। टेलीविजन, रेडियो, टेलीफोन, मोबाइल आदि के माध्यम से आप घर बैठे हजारों कोस दूर के खेल आदि दृश्य देख लेते हैं व शब्द सुन लेते हैं तथा अपने इष्टजनों से प्रत्यक्ष जैसा वार्तालाप कर लेते हैं। ये सब यंत्र पौद्गलिक हैं फिर भी इनके बनाने वाले

1. तिलोयपण्णत्ति अ. 4, पृ. 171।

तो मनुष्य ही हैं, उनके मति, श्रुत (कुमति-कुश्रुत) ज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम हम और आपसे अच्छा भी है। फिर भी इनसे आत्मा के वास्तविक सुख की सिद्धि का कोई संबंध नहीं है। प्रत्युत जो आज कसाईखाने आदि के लिए अनेक हिंसक यंत्रों के निर्माण हो रहे हैं वे सब आविष्कार नरक-निगोदों के लिए ही कारण है।

यहाँ जो इन ऋद्धियों का कथन है वह तो नियम से परम अहिंसक महाव्रती दिगम्बर मुनियों के ही संभव है। यद्यपि आज के हीन संहननधारी मुनियों के इनमें से कोई भी ऋद्धि नहीं हो सकती है। फिर भी इन ऋद्धिधारी गणधरों की या इनमें से किन्हीं एक दो आदि ऋद्धियों सहित मुनियों की पूजा करने से अनेक प्रकार के रोग, शोक, संकट, दारिद्र आदि कष्ट दूर हो जाते हैं। पूजक गुरुभक्ति के प्रभाव से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करके सुख, संपत्ति, संतति, यश आदि लौकिक वैभव को प्राप्त कर परम्परा से नियम से मोक्षसुख को प्राप्त कर लेते हैं।

इस विधान को एक दिन में भी कर सकते हैं। आठ दिन में या इच्छानुसार कई दिनों तक कर सकते हैं। इनके जाप्यानुष्ठान का मंत्र निम्न प्रकार है-

मंत्र–ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय ह्रौं ह्रौं नमः स्वाहा।

विधिवत् विधान का अनुष्ठान करें, इसमें जाप्यानुष्ठान करके दशमांश मंत्रों से आहुति देते हुए हवन विधि पूर्ण करें।

इन महर्षियों की उपासना से मानसिक शांति के साथ-साथ सम्यग्दर्शन की विशुद्धि होती है और भेदविज्ञान को प्राप्त कर भाक्तिकगण आध्यात्मिक शक्ति को बढ़ाकर अपनी शक्ति अनुसार संयम धारण करने के लिए उद्यमशील हो सकते हैं। अतः सभी देव-शास्त्र-गुरु भक्त इस विधान से इहलोक-परलोक की सिद्धि करें, यही मेरी मंगलकामना है।

विधान के अंत में इस चौंसठऋद्धि के व्रतों की विधि भी दी गई है। इस व्रत के करने से नियम से सभी प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं और आरोग्य लाभ हो जाता है इसलिए यह आरोग्यवर्धन व्रत भी कहा जा सकता है। सभी नर-नारी इस व्रत को करके शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ परम्परा से पूर्ण आध्यात्मिक स्वस्थता प्राप्त करें, यही मेरी शुभ भावना है।

विधान की रचयित्री परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। **नाम**—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएँ एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमामहावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थइत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ईसवी सन् 1972 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से स्थापित उक्त संस्था के द्वारा जम्बूद्वीप रचना के निर्माण हेतु मेरठ (उ.प्र.) के ऐतिहासिक तीर्थ हस्तिनापुर में नशिया मार्ग पर जुलाई 1974 में एक भूमि क्रय की गई, जहाँ सर्वप्रथम 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण सात हाथ (सवा दस फुट) ऊँची खड्गासन प्रतिमा विराजमान करने हेतु फरवरी 1975 में एक लघुकाय जिनालय का निर्माण किया गया, जो सन् 1990 में एक अनोखे 'कमल मंदिर' के रूप में निर्मित हुआ है। यहाँ विराजमान कल्पवृक्ष भगवान महावीर से यह अतिशय क्षेत्र निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर होता हुआ नित्य नये निर्माणों के द्वारा संसार में अद्वितीय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्ध हुआ है। इस प्रतिमा के दर्शन करके भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं।

जम्बूद्वीप निर्माण का प्रथम चरण—जुलाई सन् 1974 में रखी गई नींव के आधार पर जम्बूद्वीप के बीचोंबीच में सर्वप्रथम आगम वर्णित सुमेरुपर्वत (101 फुट ऊँचा) का निर्माण अप्रैल सन् 1979 में एवं सन् 1985 में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण पूर्ण हुआ। सोलह जिनमंदिरों से समन्वित उस सुमेरुपर्वत के अंदर से निर्मित 136 सीढ़ियों से चढ़कर श्रद्धालु भक्त समस्त भगवन्तों के दर्शन करके जब सबसे ऊपर पाण्डुकशिला के निकट पहुँचते हैं, तो नीचे जम्बूद्वीप रचना के सभी नदी, पर्वत, मंदिर, उपवन आदि दृश्यों के साथ-साथ हस्तिनापुर के आसपास के सुदूरवर्ती ग्रामों का भी प्राकृतिक सौंदर्य देखकर फूले नहीं समाते हैं।

यात्री सुविधा—हस्तिनापुर तीर्थ में जम्बूद्वीप स्थल के पूरे परिसर में संस्थान द्वारा कार्यालय का सक्रिय संचालन किया जाता है। वहाँ यात्रियों के ठहरने हेतु आधुनिक सुविधायुक्त 200 कमरे, 50 से अधिक डीलक्स फ्लैट एवं अनेकों गेस्ट हाउस (बंगले) बने हुए हैं। इसके साथ ही यहाँ सुन्दर भोजनालय है जहाँ यात्रियों को सुविधापूर्वक शुद्ध भोजन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 2 किमी. दूर हस्तिनापुर सेन्ट्रल टाउन में सरकारी अस्पताल, डाकखाना, बाजार, इंटरकालेज तथा अन्य शिक्षण संस्थाएँ आदि सभी आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

हस्तिनापुर कैसे पहुँचे ?—भारत की राजधानी दिल्ली से 110 किमी. पश्चिमी उत्तरप्रदेश में जिला-मेरठ से 40 किमी. दूर हस्तिनापुर तीर्थ है। राजधानी दिल्ली से हस्तिनापुर के लिए अंतर्राज्यीय बस अड्डे अथवा आनंद विहार बस अड्डे से उत्तरप्रदेश रोडवेज तथा डी.टी.सी. बसों की निरंतर सेवा उपलब्ध है। मेरठ से भी प्रति आधे घंटे के अंतराल से जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पहुँचने हेतु रोडवेज की बसें सुलभता के साथ उपलब्ध रहती हैं। 'जम्बूद्वीप' के नाम से ये बसें चलती हैं जो सीधे जम्बूद्वीप के सामने ही रुकती हैं और जम्बूद्वीप से ही मेरठ, दिल्ली, तिजारा आदि यात्रा हेतु बसें उपलब्ध रहती हैं। दिल्ली और मेरठ के बीच रेल सेवा भी है। देश-विदेश के यात्रीगण हस्तिनापुर पधारकर इस धरती का स्वर्ग मानी जाने वाली 'जम्बूद्वीप रचना' के दर्शन करें और मानसिक शांति का अनुभव करते हुए मनवांछित फल प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारीबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
21. श्रीमती आदर्श जैन ध.प. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
22. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)।

चौंसठ ऋद्धि विधान

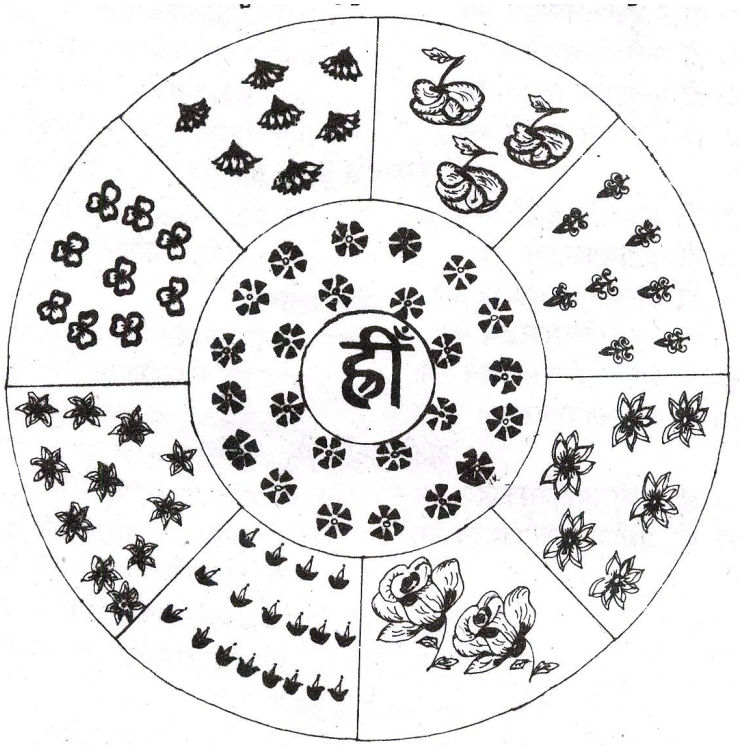

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	चौबीस तीर्थंकर एवं गणधर पूजा	2
3.	चौंसठ ऋद्धि पूजा	9
4.	बुद्धि आदि ऋद्धि पूजा	13
5.	विक्रिया ऋद्धि पूजा	20
6.	चारण ऋद्धि पूजा	26
7.	तप ऋद्धि पूजा	32
8.	बल ऋद्धि पूजा	37
9.	औषधि ऋद्धि पूजा	41
10.	रस ऋद्धि पूजा	46
11.	अक्षीण ऋद्धि पूजा	51
12.	गणधरवलय स्तुति (अन्त्य जयमाला)	56
13.	प्रशस्ति	59
14.	आरती	60
15.	चौंसठ ऋद्धि व्रतविधि	61
16.	चौंसठ ऋद्धि मंत्र	61

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिन आगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नव देवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नाना विध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देव देव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

–दोहा –

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नव देवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

चौंसठ ऋद्धि विधान

मंगलाचरण

–चाल-शेर–

अर्हंतदेव जगत् में मंगल स्वरूप हैं।
द्वादश गणों के नाथ चिदानंदरूप हैं।।
ये धर्म के तीर्थेश धर्मतीर्थ चलाते।
इनकी करूँ मैं वंदना ये सौख्य बढ़ाते।।1।।

चौबीस जिनेश्वर त्रिलोक वंद्य विश्व में।
उन दिव्यध्वनी धारते गणधर सुशिष्य हैं।।
ये विघ्न विनाशक गणेश श्रीगुरु कहे।
इन सबकी वंदना से विघ्न लेश ना रहे।।2।।

गणधर गुरु संपूर्ण ऋद्धियों के नाथ हैं।
जो पूजते श्री गुरु उन्हें करते कृतार्थ हैं।।
इनके चरण की वंदना मुनिगण सदा करें।
इनके चरण की अर्चना सुरगण सदा करें।।3।।

इन श्री गणेश गुरु को चक्रवर्ती भी नमें।
द्वादश गणों के सब असंख्य भव्य भी नमें।।
मैं इन गुरु गणधर की नित्य वंदना करूँ।
निज आत्म तत्त्व प्राप्ति हेतु प्रार्थना करूँ।।4।।

चौंसठ महाऋद्धि सभी युगपत् जहाँ प्रगटें।
गणधर गुरु ही हो सकें ना अन्य में घटें।।
इन गणधरों की ऋद्धियों की अर्चना करूँ।
चौंसठ महाऋद्धि विधान रचूँ सुख भरूँ।।5।।

इति श्री जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबीस तीर्थंकर एवं गणधर पूजा

–अथ स्थापना (दोहा)–

सब द्वीपों के मध्य है, उत्तम जंबूद्वीप।
उसके भरत सुक्षेत्र में, तीर्थंकर चौबीस।।1।।
चौदह सो उनसठ प्रमित, उनके गणधर देव।
लक्ष अठाइस औ सहस, अड़तालिस मुनिसर्व।।2।।
जिनवर गणधर मुनिवरा, ऋद्धि सिद्धि भंडार।
विधिवत् मैं पूजा करूँ, करो भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहित-चतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहित-चतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहित-चतुर्विंशतितीर्थंकर-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (नरेन्द्रछंद)–

मिष्ट सुगंधित प्रासुक जल से, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
जन्म जन्म के पाप मैल को, क्षण में दूर हटाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः जलं निर्वपामीतिस्वाहा।

केशर और कर्पूर मिलाकर, चंदन घिसकर लाऊँ।
भव संताप निवारण कारण, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः चंदनं निर्वपामीतिस्वाहा।

मुक्ताफल सम उज्ज्वल अक्षत, धोय, थाल भर लाऊँ।
अतुल अखंडित शिवपद हेतू, सुंदर पुंज रचाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अक्षतं निर्वपामीतिस्वाहा।

जुही चमेली कमल केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाऊँ।
भाव भक्ति से जिनवर चरणों, अर्पण कर सुख पाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा।

लड्डू पेड़ा फेनी घेवर, बहु नैवेद्य बनाऊँ।
क्षुधा रोग के नाशन हेतू, नित नैवेद्य चढ़ाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

स्वर्णपात्र में घृत भर करके, बाती को प्रजलाऊँ।
आरत शोक मोह अंधियारी, क्षण में दूर भगाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः दीपं निर्वपामीतिस्वाहा।

अगर तगर से मिश्रित सुरभित, धूप अग्नि में खेवूँ।
दुष्ट कर्म प्रज्वालन करके, चहुँदिश धूम्र उड़ावूँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः धूपं निर्वपामीतिस्वाहा।

आम जंभीरी जामुन केला, अनन्नास फल लाऊँ।
उत्तम सरस मोक्ष फल हेतू, जिनपद निकट चढ़ाऊँ।।

गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः फलं निर्वपामीतिस्वाहा।

जल चंदन अक्षत कुसुमादिक, लेकर अर्घ्य बनाऊँ।
जन्म मरण भय नाशन हेतू, नितप्रति अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
गणधर मुनिगण सहित जिनेश्वर, चौबीसों को ध्याऊँ।
विघ्न निवारक चरणकमल को, पूजूँ शिवपद पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

–दोहा–

देश राष्ट्र राजा प्रजा, सबकी शांती हेतु।
कनक झारि से धार दूँ, विधिवत् भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती केवड़ा, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सब दुख जाय पलाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य

–नरेन्द्र छंद–

वृषभदेव के समवसरण में, चौरासी हैं गणधर।
ऋषिगण चौरासी हजार से, शोभित हैं श्रीजिनवर।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिगणधरचतुरशीतिसहस्रमुनिगणसहितवृषभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ के नब्बे गणधर, एक लाख ऋषिगण हैं।
द्वादशगण से शोभित जिनवर, त्रिभुवन के नायक हैं।।

नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं नवति गणधरैकलक्षमुनिगणसहिताजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संभव जिनके गणधर इकसौ, पाँच कहे गुणधारी।
यतिगण हैं दो लाख कहाये, रत्नत्रय निधिधारी।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचोत्तरशतगणधर द्वयलक्षमुनिगणसहितसंभवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनंदन के गणधर इक सौ, तीन सभी के नायक।
तीन लाख मुनिगण शोभित हैं, अक्षय सौख्य प्रदायक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्र्युत्तरशतगणधरत्रयलक्षमुनिगणसहितअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ के इक सौ सोलह, गणधर ऋद्धि प्रदायक।
तीन लाख अरु बीस सहस मुनि, चारित गुण के नायक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशोत्तरशतगणधरत्रयलक्षविंशतिसहस्रमुनिगणसहित-सुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ के इक सौ ग्यारह, गणधर गुणमणि भूषित।
तीन लाख त्रय सहस यतीगण, ऋद्धि सिद्धि गुणपूरित।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादशोत्तरैकशतगणधरत्रयलक्षत्रिंशतसहस्रमुनिगण-सहितपद्मप्रभनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व के पंचानवे थे, गणधर पापविघातक।
तीन लाख मुनिगण गुण मंडित, भव भय दुःखविदारक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचनवतिगणधरत्रिलक्षमुनिगणसहितसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभ के तिरानवे थे, गणधर धर्म प्रचारक।
दोय लाख पच्चास सहस मुनि, धर्म शुक्ल के धारक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनवतिगणधरद्विलक्षपंचाशत्सहस्रमुनिगणसहिचन्द्रप्रभनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत के अठ्यासी श्री, गणधर अंतर्यामी।
मुनिगण थे दो लाख कहाये, सब त्रिभुवन के स्वामी।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिगणधरद्वयलक्षमुनिगणसहितपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिनके सत्यासी थे, गणधर शीतलकारी।
एक लाख मुनिगण भविजन के, पाप ताप दुःखहारी।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्ताशीतिगणधरैकलक्षमुनिगणसहितशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर श्री श्रेयांसनाथ के, सत्तत्तर थे गणधर।
मुनिगण चौरासी हजार थे, रोग शोक संकट हर।।

नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तसप्ततिगणधरचतुरशीतिसहस्रमुनिगणसहितश्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य के गणधर छ्यासठ, मुक्तिरमा के भर्ता।
मुनिगण सब थे सहस बहत्तर, भविजन के दुःखहर्ता।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्षष्टिगणधरद्वासप्ततिसहस्रमुनिगणसहितवासुपूज्यनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल जिनेश्वर गणधर पचपन, द्विविध कर्ममल धोया।
अड़सठ सहस यतीगण सबने, भव भय संकट खोया।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचपंचाशत्गणधरअष्टषष्टिसहस्रमुनिगणसहितविमलनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनंत के पचास गणधर, परमानंद विधाता।
छ्यासठ सहस साधुगण जग को, धर्मामृत के दाता।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचाशत्गणधरषट्षष्टिसहस्रमुनिगणसहितअनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मनाथ के तैंतालिस थे, गणधर धर्मप्रवर्तक।
चौंसठ सहस मुनीगण शोभें, धर्मतीर्थ संवर्धक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिचत्वारिंशत्गणधरचतुःषष्टिसहस्रमुनिगणसहितधर्मनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ के छत्तिस गणधर, अक्षय शांतिविधाता।
बासठ सहस मुनीगण गुणमणि, अतिशय सौख्यप्रदाता।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्त्रिंशत्गणधरद्विषष्टिसहस्रमुनिगणसहितशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंथुनाथ के पैंतिस गणपति, शिवलक्ष्मी अधिनायक।
साठ सहस मुनिगण व्रत संयम, शील गुणों के धारक।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचत्रिंशत्गणधरषष्टिसहस्रमुनिगणसहितकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर जिनवर के तीस गणाधिप, त्रिभुवन सिद्धि वधूवर।
मुनिगण सहस पचास कहाये, ऋद्धि सिद्धि संपति कर।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिंशत्गणधरपंचाशत्सहस्रमुनिगणसहितअरनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिनाथ के अट्ठाईस हैं, गणधर त्रिभुवन नेता।
चालिस हजार मुनिगण गुणधर, मोह मल्ल के जेता।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशतिगणधरचत्वारिंशत्सहस्रमुनिगणसहितमल्लिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत के कहे अठारह, गणपतिव्रत के नायक।
तीस सहस मुनिगण शोभित थे, रत्नत्रय प्रतिपालक।।

नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशगणधरत्रिंशत्सहस्रमुनिगणसहितमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमि जिनवर के सत्रह गणधर, भव भय संकट चूरण।
बीस सहस मुनिगण जगनायक, त्रिभुवन गुणगणपूरण।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदशगणधरविंशतिसहस्रमुनिगणसहितनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ के ग्यारह गणधर, स्वात्म सुधारस पीते।
सहस अठारह मुनिगण सबने, क्रोध मोह रिपु जीते।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादशगणधरअष्टादशसहस्रमुनिगणसहितनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ के दश गणधर थे, अक्षय गुणभंडारी।
सोलह हजार मुनिगण जग में, भव भव के अघटारी।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशगणधर-षोडशसहस्रमुनिगणसहितपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर के ग्यारह गणधर, भविजन संकट चूरें।
चौदह हजार मुनिगण जन की, रत्नत्रय निधि पूरें।।
नीरादिक ले अर्घ्य बनाकर, जिनवर चरण चढ़ाऊँ।
मोहध्वांत को शीघ्र भगाकर, चिन्मय ज्योति जगाऊँ।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकादशगणधरचतुदर्शसहस्रमुनिगणसहितमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौबोल छंद–

चौबीस जिनके गणनायक हैं, चौदह सौ उनसठ परिमाण।
लक्ष अठाइस सहस सुअड़तालिस मुनिगण हैं कृपानिधान।।
जल चंदन अक्षत आदिक ले अर्घ्य चढ़ाकर गुण गाऊँ।
भव भय दुःख को शीघ्र नाशकर, फेर न भव वन में आवूँ।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकोनषष्टिअधिकचतुर्दशशतगणधरसहितअष्टाविंशतिलक्षअष्ट-चत्वारिंशत्सहस्रमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीस्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं सर्वगणधरमुनिगणसहितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।**

जयमाला

–सोरठा–

स्वर्ग मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर।
गाँऊ गुणमणिमाल, करूँ सफल नरभव सही।।1।।

–चौबोल छंद–

जय जय वृषभ अजित संभव जिन, अभिनंदन आनंद भरो।
जय जय सुमतिनाथ पद्मप्रभ, श्रीसुपार्श्व भव पाश हरो।।
जय जय चंद्रप्रभ चंद्रानन, पुष्पदंत शीतल श्रेयांस।
जय जय वासुपूज्य विमलप्रभु, जय अनंत जय धर्म जिहाज।।2।।

जय जय शांतिनाथ शांतिप्रद, कुंथु अरहजिन मल्लिजिनेश।
जय जय मुनिसुव्रत व्रतदाता, नमि नेमिश्वर पार्श्व महेश।।
जय जय वीरनाथ परमेश्वर जय, भुवनेश्वर दया करो।
जय जय परमानंद परमपद, देकर मुझको तृप्त करो।।3।।

जय जय वृषभसेन आदिक सब, चौदह सौ उनसठ गणनाथ।
जय जय पूर्वधरादि मुनिगण, सात संघ जग में विख्यात।।
छत्तिस हजार नव सौ चालिस, कहे पूर्वधर मुनि पुंगव।
बीसलाख औ पाँच सौ पचपन, शिक्षक मुनि हैं विगत विभव।।4।।

एक लाख औ सहस सत्ताइस, छह सौ अवधीज्ञानी हैं।
एक लाख औ सहसपचासी, आठ सौ केवलज्ञानी हैं।।
विक्रिय ऋद्धिधारक मुनि दो लाख पचीस सहस नवशत।
विपुलमती मुनि एक लाख औ, चौवन सहस सु नव सौ पाँच।।5।।

वादकुशल मुनि एक लाख औ, सोलह सहस तीन सौ जान।
चौबिस तीर्थंकर के ये सब, सात संघ के मुनी महान्।।
सब मुनि लक्ष अठाइस जानो, सहस सु अड़तालीस प्रमाण।
लाख पचास औ हजार छप्पन, द्विशत पचास आर्यिका मान।।6।।

श्रावक अड़तालिस लक्षावधि, कही श्राविका छ्यानवे लाख।
असंख्यात सुरअसुरेन्द्रादि, नर तिर्यंच कहे संख्यात।।
द्वादशगण से वेष्टित जिनवर, त्रिभुवनपति से वंदित हैं।
समवसरण के अतुलित वैभव, प्रातिहार्य से मंडित हैं।।7।।

अंतः वैभव अनंत दर्शन, ज्ञानवीर्य सुख चार महान्।
छयालिस गुणयुत दोष अठारह, रहित जिनेश्वर गुण की खान।।
जय जय मुक्तिरमा परमेश्वर, जय जग शंकर विष्णु जिनेश।
जय जय शिवसुखकर्ता ब्रह्मा, जय जग तारक जिष्णु महेश।।8।।

–घत्ता–

जय जय गुणसागर, धर्मसुखाकर, तीर्थ उजागर जिनदेवा।
जय तुम पद ध्याऊँ, पाप नशाऊँ, शिवपद पाऊँ भव छेवा।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगणधरमुनिगणादिद्वादशगणवंदितचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-2

चौंसठ ऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद)–

चौबीस तीर्थंकर जगत में, सर्व का मंगल करें।
गुणरत्न गुरु गुण ऋद्धिधर, नित सर्व मंगल विस्तरें।।
गुणरत्न चौंसठ ऋद्धियाँ मंगल करें निज सुख भरें।
मैं पूजहूँ आह्वान कर मेरे अमंगल दुख हरें।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (वसंततिलका छंद)–

रेवा नदी जल भराकर शुद्ध लाऊँ।
संपूर्ण कर्ममल दूर करो चढ़ाऊँ।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।1।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरि केशर घिसूँ भरके कटोरी।
चर्चूं मिटे हृदय ताप सुआश पूरी।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।2।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान धवलाक्षत थाल में हैं।
धारूँ सुपुंज जिन सौख्य अखंड हो हैं।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।3।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अक्षयपदप्राप्यते अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला जुही कमल फूल खिले खिले हैं।
पूजूँ सदा सुयश सौख्य मिले भले हैं।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पुआ घृत भरे पक्वान लाऊँ।
क्षुद्र व्याधि नष्ट करने हित मैं चढ़ाऊँ।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती करती उजाला।
ज्ञानैक ज्योति भरती भ्रमतम निकाला।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।6।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंध वर धूप सुअग्नि संगी।
दुष्टाष्ट कर्म जलते करते सुगंधी।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।7।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अनार फल आम्र भराय थाली।
अर्पूं तुम्हें नहिं मनोरथ जाय खाली।।
बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।8।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ कर स्वर्णिम पुष्प लेऊँ।
अर्घावतार करके निज रत्न लेऊँ।।

बुद्ध्यादि चउसठ महागुण पूर्ण ऋद्धी।
पूजूँ मिले नवनिधी सब ऋद्धि सिद्धी।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **चौंसठ ऋद्धि समूह को, जलधारा से नित्य।**
पूजत ही शांती मिले, चहुँसंघ में भी इत्य[1]।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः।

जयमाला

–सोरठा–

ऋद्धि उन्हीं के होय, यथाजात मुद्रा धरें।
नमूँ नमूँ नत होय, जिनमुद्रा की शक्ति हो।।1।।

–स्रग्विणी छंद–

धन्य हैं धन्य हैं धन्य हैं ऋद्धियाँ।
वंदते ही फलें ये सभी सिद्धियाँ।।
मैं नमूँ मैं नमूँ सर्व ऋद्धीधरा।
ऋद्धियों को नमूँ मैं नमूँ गणधरा।।2।।
बुद्धि ऋद्धी कही हैं अठारा विधा।
विक्रिया ऋद्धियाँ हैं सुग्यारा विधा।।
है क्रियाचारणा ऋद्धि नौभेद में।
ऋद्धि तप सात विध दीप्त तप आदि में।।3।।
ऋद्धि बल तीन विध शक्ति वर्धन करे।
औषधी आठ विध स्वास्थ्य वर्धन करे।।
ऋद्धि रस षट्विधा क्षीर अमृत स्रवे।
ऋद्धि अक्षीण दो भेद अक्षय धरें।।4।।

1. यहाँ।

आठ विध ये महा ऋद्धि चौंसठ विधा।
भेद संख्यात होते सु अंतर्गता।।
बुद्धि ऋद्धी जजें बुद्धि अतिशय धरें।
विक्रिया पूजते विक्रिया बहु करें।।5।।

चारणी ऋद्धि आकाशगामी करें।
पुष्प जल पर चलें जीव भी ना मरें।।
दीप्ततम आदि ऋद्धि धरें जो मुनी।
कांति आहार बिन भी रहे उन घनी।।6।।

तप्ततप से कभी भी न नीहार हो।
शक्ति ऐसी जगत् सौख्य करतार जो।।
क्षीरस्रावी मधुस्रावी अमृतस्रवी।
इन वचो भी बने क्षीर अमृतस्रवी।।7।।

औषधी ऋद्धि से रुग्ण नीरोग हों।
साधु तनवायु से विष रहित स्वस्थ हों।।
ऋद्धि अक्षीण से अन्न अक्षय करें।
पूजते साधू को पुण्य अक्षय भरें।।8।।

–घत्ता–

जय जय सब ऋद्धी, गुणमणिनिद्धी, पूजत ही सुखसिद्धि करें।
जय ''ज्ञानमती'' धर, नमें मुनीश्वर, निज शिवपद सुख शीघ्र भरें।।9।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-3

बुद्धि आदि ऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना (चौबोल छंद)–

तपश्चरण से कर्म गलित हों, नाना ऋद्धी प्रगटित हों।
ज्ञानस्वरूपी निज आत्मा में, ज्ञानज्योति उद्घाटित हो।।
बुद्धि ऋद्धी को नित्य जजूँ मैं, विधिवत् आह्वानन करके।
मेरी बुद्धी निर्मल होवे, ज्ञानावरण कर्म विघटें।।1।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (वसंततिलका छंद)–

गंगानदी जल भरा शुचि स्वर्ग झारी।
पादारविंद ऋषि के त्रय धार देऊँ।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर केशर घिसा भरके कटोरी।
योगीन्द्र पादयुग में चर्चूं रुची से।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान सित अक्षत धोय लाया।
पादाब्ज के निकट पुंज चढ़ाय देऊँ।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा जुही सुरभि पुष्प गुलाब के हैं।
अर्पूं गणीन्द्र चरणों यश गंध फैले।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरी सोहाल बरफी पकवान लाडू।
योगींद्रदेव सनमुख अर्पण करूँ मैं।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जलती तम नाशती है।
मैं आरती करत ही निज ज्योति पाऊँ।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंधि वर धूप गणीन्द्र आगे।
हों कर्मभस्म फिर धूयें साथ भागें।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम्र फल श्रीफल मैं चढ़ाऊँ।
सर्वार्थसिद्धि मिल जाए अतः रिझाऊँ।।
बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ सुम चांदी के मिलाये।
होवे अनर्घ पद प्राप्त तुम्हें चढ़ायें।।

बुद्ध्यादि ऋद्धि यजते शुचि ज्ञान पाऊँ।
आनंदकंद निज स्वात्मनिधी लहूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा–

बुद्धिऋद्धि समूह को, जलधारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चहुँसंघ में भी इत्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जाप्य – **ॐ ह्रीं बुद्ध्यादिअष्टादशऋद्धिभ्यो नमः।**

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

गुणीजनों में गुण रहें, बिन आश्रय न बसंत।
अतः गुणों को पूजते, गुणी स्वयं पूजंत[1]।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–अडिल्ल छंद–

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह जानिये।
पहली ऋद्धी अवधिज्ञान है मानिये।।
अणु से महास्कंध पर्यंते मूर्त को।
जो जाने मैं नित पूजूँ उस ऋद्धि को।।1।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज लोक के भीतर चिंतित वस्तु को।
आत्मा से उत्पन्न मनपर्यय ज्ञान जो।।

1. पूजा हो जाती है।

जाने अतिशय सूक्ष्म मूर्तमय द्रव्य को।
पूजूँ मैं मनपर्यय ज्ञान सुऋद्धि को।।2।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकालोक प्रकाशे केवलज्ञान जो।
इक क्षण में त्रयकालिक वस्तु प्रत्यक्ष हो।।
ज्ञानज्योतिमय केवल भास्कर को जजूँ।
निज परमानंदामृत अनुभव को चखूँ।।3।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द संख्यातों अर्थ अनंतों से युते।
अनंत लिंगों साथ बीजपद जानते।।
बीजभूत पद सब श्रुत का आधार है।
जजूँ बीज बुद्धी शिवपद करतार है।।4।।

ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दरूप बीजों को मति से जो ग्रहें।
श्रेष्ठ धारणायुक्त मुनी वो ही कहें।।
मिश्रण बिन बुद्धी कोठे में जो धरें।
पृथक् पृथक् सब अर्थ कोष्ठबुद्धी खरें।।5।।

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश सुपाय एक पद को ग्रहे।
उसके ऊपर या पहले के पद लहे।।
उभय ग्रहे त्रय विध पादानुसारिणी।
जजूँ ऋद्धि यह बुद्धि बढ़ावन कारिणी।।6।।

ॐ ह्रीं पदानुसारिणी बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रोत्रेंद्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाहिरे।
संख्यातों योजन तक नर पशु सर्व के।।
अक्षर अनक्षरात्मक वच सुन उत्तरें।
संभिन्नश्रोतृ बुद्धि को पूजूँ रुचि धरें।।7।।

ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्व बुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसनेंद्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य जो।
संख्यातों योजन नाना रस स्वाद को।।
जो जाने दूरास्वादन ऋद्धी धरें।
इस ऋद्धी को जजूँ सर्व व्याधी हरें।।8।।

ॐ ह्रीं दूरास्वादित्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्पर्शेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य भी।
संख्यातों योजन स्पर्श सब जानहीं।।
तप बल से यह ऋद्धि प्रगट हो साधु के।
जजूँ भक्ति से मिले, ऋद्धियाँ ठाठ से।।9।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राणेंद्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र के बाह्य में।
संख्यातों योजन सुगंध को जानते।।
अधिक क्षयोपशम पाय ऋद्धि यह ऊपजे।
जजूँ ऋद्धि को सर्वसौख्य गुण पूरते।।10।।

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्णेन्द्रिय उत्कृष्ट विषय के बाहिरे।
संख्यातों योजन मनुष्य पशु अक्षरें।।
पृथक् पृथक् सुन लेय ऋद्धिधर मुनिवरा।
जजूँ दूरश्रवणत्व ऋद्धि को रुचिधरा।।11।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रेन्द्रिय उत्कृष्ट क्षेत्र से बाह्य जो।
संख्यातों योजन सब कुछ भी देख वो।।
चक्रवर्ति के नेत्र विषय से अधिक भी।
दूरदर्शिता ऋद्धि जजूँ रुचिधर अभी।।12।।

ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–नरेन्द्र छंद–

रोहिणी प्रभृति महाविद्यायें, पांच शतक मानी हैं।
लघु विद्या अंगुष्ठ प्रसेना, प्रभृति सप्तशत ही हैं।।
दशम पूर्व पढ़ने पर ये विद्यायें आज्ञा माँगे।
पूजूँ अभिन्नदशपूर्वी जो इन वश में नहिं जाते।।13।।

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ऋषि सब आगम के ज्ञाता, श्रुतकेवलि कहलाते।
ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, पढ़ यह ऋद्धी पाते।।
आगम ज्ञान पूर्ण होवे मुझ इस आशा से पूजूँ।
स्वपर भेद विज्ञान प्राप्त कर, सर्वभयों से छूटूँ।।14।।

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभ्र[1] भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण चिन्ह स्वपन हों।
आठ निमित्तों से जनके शुभ अशुभ बताते मुनि जो।।
वे अष्टांग महानिमित्त की ऋद्धि धरें बहु ज्ञानी।
इस ऋद्धी को पूजत ही मैं बनूँ सर्वसुखदानी।।15।।

ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो महर्षि अध्ययन बिना उत्कृष्ट क्षयोपशम से ही।
चौदह पूर्व विषय अति सूक्षम जाने निरूपते भी।।
औत्पत्तिक परिणामिक विनयिक कही कर्मजा बुद्धी।
चार भेदयुत जजूँ इसे यह प्रज्ञा श्रमण सुऋद्धी।।16।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु उपदेश बिना कर्मों के, उपशम से तप बल से।
जो प्रत्येकबुद्धि ऋद्धी है, ऋषियों के ही प्रगटे।।
सम्यग्ज्ञान महातप मुझको मिले इसी से पूजूँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के सर्वदुखों से छूटूँ।।17।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आकाश।

सब परमत को सुरपति को भी जो कर सकें निरुत्तर।
परके द्रव्य गुणादि परीक्षा करके छिद्र लखें भर।।
वाद कुशल इन मुनि चरणों में शत शत शीश नमाऊँ।
इस वादित्व ऋद्धि को जजते स्वसमय ज्ञान उपाऊँ।।18।।

ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य दोहा–

बुद्धि ऋद्धियों को नमूँ, अठरह भेद समेत।
पाऊँ भेदविज्ञान मैं, अतिशय बुद्धी समेत।।19।।

ॐ ह्रीं अष्टादशबुद्धिऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

बुद्धि ऋद्धियों को नमूँ, नमूँ ऋद्धिधर नाथ।
उनकी गुणमाला कहूँ, हो मम बुद्धि कृतार्थ।।1।।

–चाल-शेर–

जय बुद्धिऋद्धियाँ अठारहों महान है।
जय जय सुऋद्धिमंत साधु को प्रणाम है।।
जय अवधिज्ञान ऋद्धि आदि सर्वऋद्धियाँ।
ये भक्तगण को बांटती संपूर्ण सिद्धियाँ।।2।।

मतिज्ञान के सुभेद तीन सौ छत्तीस हैं।
प्रत्येक के असंख्य भेद शास्त्र में कहें।।
इन ज्ञान के भी आवरण उतने ही जानिये।
इनके क्षयोपशम से बुद्धि ऋद्धि मानिये।।3।।

जो दूर श्रवण आदि ऋद्धि इन्द्रियों की हैं।
इंद्रिय विषय उलंघ विषय दूर भी ग्रहें।।

दश पूर्व और चतुर्दश पूर्वों की ऋद्धियाँ।
अष्टांग महानिमित्तादि सर्वसिद्धियाँ।।4।।

जो साधु अठाईस मूलगुण को धारते।
बहुविध के भी उत्तर गुणों को नित्य पालते।।
एकाग्रमना होके स्वात्मध्यान को धरें।
उनमें तपश्चरण के बल से ऋद्धि अवतरें।।5।।

आत्मा सदा गुणस्थान चौदहों से शून्य है।
ये जीव समासों से मार्गणा से शून्य है।।
पर्याप्ति प्राण संज्ञा से रहित शुद्ध है।
त्रयकाल शुद्ध नित्य निरंजन प्रबुद्ध है।।6।।

वर्णादि रहित ज्ञानमात्र चिदानंद है।
चिन्मय अमूरत परमहंस निजानंद है।।
यह शक्तिरूप से अनंतज्ञान स्वरूपी।
दर्शन व सौख्य वीर्य धारता भी अरूपी।।7।।

निश्चयनयाश्रित आत्मा परमात्मा कहा।
पूजक व पूज्य भेदरहित सिद्ध हो रहा।।
व्यवहारनय से पूज्य को ये पूज रहा है।
संसार में रहता हुआ भी अशुद्ध कहा है।।8।।

अतएव ये पूजाविधी से शुद्ध होयगा।
पूजा के फल को प्राप्त करके सिद्ध होयगा।।
यह जानकर के नाथ! आप पास में आया।
सब कर्ममल धुलेंगे यही आश ले आया।।9।।

करके कृपा गुरुदेव! मुझपे दृष्टि दीजिये।
शिवपथ के विघ्न चूरिये वर शक्ति दीजिये।।
चिंतामणी चैतन्यनिधि मुझको दीजिये।
कैवल्य ''ज्ञानमती'' बुद्धि पूर्ण कीजिये।।10।।

-दोहा-

गणपति गुणमणिनिधिपती, शिवलक्ष्मी के कांत।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ सौख्य नितांत।।11।।

ॐ ह्रीं अष्टादशविधबुद्धिऋद्धिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-चौबोल छंद-

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-4

विक्रिया ऋद्धि पूजा

-अथ स्थापना (गीता छंद)-

जैनेंद्र भाषित तपश्चर्या जो करें नित चाव से।
वे विक्रिया ऋद्धी प्रगट वरते अपूरब भाव से।।
उन ऋद्धिधर ऋषिनाथ को मैं भक्ति से पूजूँ यहाँ।
इन ऋद्धि ग्यारह भेद विक्रिय को जजूँ थापूँ यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक (नाराच छंद)-

हिमाद्रि गंग नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
गणेश पादपद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।1।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अष्ट गंध लेय हर्ष भाव ठानिये।
गणेश पाद पद्म चर्च मोह ताप हानिये।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।2।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कमोद जीरिका अखंड शालि धान्य लाइये।
सुपुंज आप पास दे अखंड सौख्य पाइये।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।3।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब कुंद पारिजात पुष्प अंजली लिये।
गणेश पाद पूज कामदेव को हनीजिये।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।4।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुहाल फेनि लाडु व्यंजनादि भांति भांति के।
गणेश पाद पूजते भगे क्षुधा पिशाचिके।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।5।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड ज्योति हेतु दीप स्वर्ण पात्र में जले।
गणेश पाद पूजते हि मोह ध्वांत भी टले।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।6।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप लेय अग्निपात्र में सुखेइये।
गणेश सन्निधी तुरंत कर्म भस्म देखिये।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।7।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इलायची लवंग द्राक्ष औ बदाम लाइये।
गणेश को चढ़ाय मुक्तिबल्लभा को पाइये।।
विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।8।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अष्ट द्रव्य लेय अर्घ को बनाइये।
अनर्घ सौख्य हेतु नित्य नाथ को चढ़ाइये।।

विक्रियर्द्धि ग्यारहों को, भक्त पूजते सदा।
महान भक्ति भाव धार, आज मैं जजूँ मुदा।।10।।

ॐ ह्रीं एकादशविक्रियाऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **विक्रिय ऋद्धि समूह को, जलधारा से नित्य।**
पूजत ही शांति मिले, चहुंसंघ में भी इत्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

सोरठा- **पुष्पांजलि विकिरंत, गणधर गुरु के चरण में।**
विक्रियऋद्धि धरंत, विष्णुकुमार मुनी नमूँ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

-रोलाछंद-

अणु बराबर छिद्र, जो ऋषि घुस जावें।
चक्रवर्ति का कटक क्षण में पूर्ण बनावें।।
उनके अणिमा ऋद्धि धरे विक्रिया भारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूं जगत् हितकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू बराबर देह, विक्रिय से जो करते।
महिमा ऋद्धि समेत तप बल से ही बनते।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।2।।

ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायू से भी अधिक हल्की देह बनावें।
लघिमा ऋद्धिविशिष्ट, मुनिवर के गुण गावें।।

विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जनको उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।3।।

ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधिक भारयुत वज्र सदृश देह धरें जो।
गरिमा ऋद्धि धरंत, तप अतिशायि करें जो।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को हितकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।4।।

ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूमी पर ही रहें, सूर्य चंद्र छू लेते।
अंगुलि से ही साधु मेरु शिखर छू लेते।।
प्राप्तिनाम विक्रिया, सब जन को हितकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।5।।

ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू पर भी जलसदृश उन्मज्जन कर सकते।
जल में भी भू सदृश, सरल गमन कर सकते।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को हितकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।6।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में पड़े प्रभुत्व, यह ईशत्व कहावे।
सब जन करें प्रशंस, यह अतिशय बन आवे।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जनको उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।7।।

ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन वश में होंय, सब गुरु के गुण गाते।
ऋद्धि वशित्व समेत, जजत सभी दुख जाते।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।8।।

ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके बल से शैल, शिला आदि के मधि से।
वृक्ष आदि में छेद, किये बिना ही चलते।।
विक्रिय अप्रतिघात, ऋद्धि जगत उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धि से साधु, हों अदृश्य नहिं दिखते।
ऋद्धी अन्तर्धान, तप बल से ही उपजे।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।10।।

ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकहि साथ अनेक रूप बना सकते जो।
काम रूप यह ऋद्धि, तप बल से प्रगटे जो।।
विक्रिय ऋद्धि माहात्म्य, सब जन को उपकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय बनूँ जगत् हितकारी।।11।।

ॐ ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-गीता छंद-

जो मन वचन तन के विकारों को तजें शुचिभाव से।
उनके प्रगट हो विक्रिया ऋद्धी विशुद्धि प्रभाव से।।
विष्णुकुमार मुनी सदृश सब विक्रियाधर को नमूँ।
उन साधु को अरु ऋद्धि को पूजूँ स्वपरिणति में रमूँ।।12।।

ॐ ह्रीं एकादशविधिविक्रियाऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-**ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

विक्रिय ऋद्धी प्राप्त कर, हुये सिद्ध भगवंत।
गाऊँ उन गुणमालिका, मिले भवोदधि अंत।।1।।

-पद्धड़ी छंद-

जय जय श्रीगणधर गुरु महान, जय ऋद्धि सिद्धिवर सुगुण खान।
जय मूल सुगुण अठवीस सांच, जय पंच महाव्रत समिति पाँच।।2।।
जय पंचेन्द्रिय वश में करंत, जय षट् आवश्यक नित करंत।
जय भूमि शयन कर केशलुंच, जय स्थिति भोजन एक भुक्त।।3।।
जय नहिं स्नान कभी करंत, जय दंत अधावन व्रत धरंत।
जय वस्त्ररहित निर्ग्रंथ वेष, जय दिशावस्त्र धर शुद्ध वेष।।4।।
जय मूलगुणों से युत महंत, जय छत्तिस उत्तरगुण धरंत।
जय बारहविध तप को तपंत, जय बाइस परिषह को सहंत।।5।।
जय आकिंचन व्रत को धरंत, जय रत्नत्रयनिधि से महंत।
जय काम क्रोध मद मोह मार, जय रागद्वेष ईर्ष्या विसार।।6।।
जय जय कषाय अरि को जयंत, जय रोग शोक का किया अंत।
जय तुम गुणमणि महिमा अपार, जय ऋषिगण भी नहिं लहे पार।।7।।
जय निज आतम अनुभव करंत, जय ध्यानामृत सुख स्वादवंत।
जय भाक्तिक जन के दुख हरंत, जय सिद्धि धाम देते तुरंत।।8।।
जय तप से विक्रिय ऋद्धि प्राप्त, जय जय भक्तों के तुम्हीं आप्त।
जय जय विक्रिय ऋद्धी महान्, मैं नमूँ तुम्हें गुणमणि निधान।।9।।

-दोहा-

ऋद्धि प्राप्त मुनि को नमूँ, नमूँ विक्रिया ऋद्धि।
''ज्ञानमती'' कैवल्य कर, पाऊँ नवनिधि सिद्धि।।10।।

ॐ ह्रीं एकादशविधविक्रियाऋद्धिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-चौबोल छंद-

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-5

चारण ऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद)–

सम्यक्त्ववंत महंत चारण ऋद्धिमंत मुनीश्वरा।
आकाश जल थल में सदा विचरण करें ऋद्धीधरा।।
उन योगियों अरु ऋद्धियों की मैं यहाँ अर्चा करूँ।
आह्वानन कर थापूँ यहाँ मन में सहज श्रद्धा धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (चाल-नंदीश्वर पूजा की)–

सुरगंगा का शुचिनीर, तनुमल शुद्ध करे।
मिल जावे भवदधि तीर, मुनि पद धार करें।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।1।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनद्रव सम शुचिगंध, तन की ताप हरे।
ऋषिचरण सरोरूह चर्च, भव संताप हरें।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।2।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि रश्मि सदृश सित धौत, तंदुल गंध भरे।
अक्षय आतम सुख हेत, तुम ढिग पुंज धरें।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।3।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अरविंद कुमुद मचकुंद सुरभित मन भावें।
मदनारिजयी पदकंज, पूजत हरषावें।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।4।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर बरफी पकवान, ताजे थाल भरें।
हो स्वात्म सुधारस पान, तुम ढिग भेंट धरें।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।5।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक जगमग ज्योति, तम अज्ञान हरे।
पूजत मुनिचरण सरोज, मन की भ्रांति टरे।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।6।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंध, खेवत धूम्र उड़े।
गुरुपद पंकज की भक्ति, करते सौख्य बढ़े।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।7।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला एला बादाम, उत्तम सरस लिये।
मिल जावे निज सुख धाम, तुम पद अर्घ्य किये।।
चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।8।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि शुभ अर्घ बनाय, तुम पद मैं पूजूँ।
रत्नत्रय निधि को पाय, संकट से छूटूँ।।

चारण ऋद्धी नवभेद, परमानंद करें।
जो पूजें भक्ति समेत, नवनिधि ऋद्धि भरें।।9।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

चारणऋद्धि समूह को जलधारा से नित्य।
पूजत ही शांती मिले, चउसंघ में भी इत्य।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल बेला कुसुम, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि से पूजते, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा–

श्रीमुनिवर गुणवान, अनुपम सुख की खान हो।
मैं पूजूँ धर ध्यान, पुष्पांजलि करके यहाँ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

–गीता छंद–

जिस ऋद्धि बल से मुनिवरा आकाश में भी चल रहे।
बैठे लगा आसन चलें या कायोत्सर्ग से चल रहे।।
इस नभस्तलगामित्व ऋद्धि को जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।1।।

ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल में चलें जलकाय जन्तू, घात नहिं होवे वहाँ।
यह ऋद्धि अतिशय दयाधारी मुनी पा सकते यहाँ।।
इस नीर चारणक्रिया ऋद्धी को जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।2।।

ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो चार अंगुल भूमि तजकर अधर ही नभ में चलें।
घुटने बिना मोड़े खड़े ही ऋद्धि के बल से चलें।।
इस ऋद्धि जंघाचारणी को मैं जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।3।।

ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन के फलों पर पुष्प पत्तों पर चरण धर के चलें।
इस ऋद्धि से नहिं जीव को पीड़ा कभी हो सुख भले।।
फलपुष्प पत्र सु चारिणी ऋद्धी जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।4।।

ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी शिखा पर चलें बाधा जीव को नहिं रंच हो।
जो धूयें का अवलंब कर अस्खलित पग चलते अहो।।
यह अग्नि धूम सुचारणी ऋद्धी जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।5।।

ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मेघ पर भी चलें अप्कायिक दया से पूर्ण हैं।
बहु मेघ जलधारा बरसतीं पर चलें व्रत पूर्ण हैं।।
यह मेघधारा चारणी ऋद्धी जजूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।6।।

ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मकड़ियों के तंतु पर अत्यंत हल्के पग रखें।
अति शीघ्र कर जावें गमन, बाधा न हो कुछ जंतु के।।
इस तंतुचारण ऋद्धि को मैं पूजहूँ नित भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।7।।

ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सूर्य चंद्र सुतारका नक्षत्र ग्रह की किरण का।
अवलंब लेकर गमन करते बहुत योजन भी सदा।।

यह ऋद्धि ज्योतिषचारिणी मैं नित्य पूजूँ भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट दूर हों गुरु छांव से।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धि से मुनि वायु पंक्ती, के सहारे चल सकें।
अस्खलित पद विक्षेप करते, बहुत कोशों चल सकें।।
यह ऋद्धि वायूचारणी, मैं नित्य पूजूँ भाव से।
सब रोग शोक दरिद्र संकट, दूर हों गुरु छांव से।।9।।

ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-शंभु छंद-

आकाश में जल में व भू पर पुष्प फल पत्रादि पर।
चलते ऋषीश्वर ऋद्धि बल से अग्नि लौ के भी उपर।।
ये योगिगण हमको शरण दें भक्तवत्सल जान कर।
हम पूजते उन साधु को नव रिद्धि को शुचि भाव धर।।10।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणक्रियाऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **ॐ ह्रीं चारणऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

-दोहा-

चारणऋद्धि समेत ऋषि, नमूँ नमूँ नत भाल।
गाऊँ गुणमाला अबे, हे गुरु करो निहाल।।1।।

-चौबोल छंद-

गुरुवर! काल अनादी से, मैं इस भव वन में भटक रहा।
अब तक काल अनंतानंते, बीत गया अब श्रांत हुआ।।
नाथ! निगोद राशि में मैंने, एक श्वांस में अठ दश बार।
जन्म मरण बहु किये वहाँ पर, काल बिताया अमित अपार।।2।।

जैसे तैसे भू जल वायू, अग्निकाय में जन्म लिया।
वनस्पती के सुंदर-सुंदर, तन धर धर मैं भ्रमण किया।।
सुभग कर्म से जुही केतकी, कमल गुलाब सुपुष्प हुआ।
अगणित विध के लता वृक्ष औ, पत्रांकुर तन प्राप्त किया।।3।।

कहीं कदाचित् चिंतामणि सम, त्रस पर्याय मिली भगवन्।
वहाँ शंख केंचुआ बिच्छू खटमल मक्खी मच्छर बन बन।।
कभी हुआ पंचेन्द्रिय प्राणी, हाथी घोड़ा अज भैंसा।
कर्म उदय से भूख प्यास, आतप आदिक दुख से रोता।।4।।
सिंह व्याघ्र सर्पादि पशू हो, निबल जंतु के प्राण लिये।
कभी निबल हो बहु दुख भोगे, पशु पक्षी तन धार नये।।
कहूँ कहाँ तक गया नरक में, वहाँ परस्पर घात प्रहार।
आरे से चीरें तन फाड़ें, तपे तेल में देते डार।।5।।

कुंभीपाक पकाते तन को, मुग्दर से मारें चूरें।
वैतरणी औ सेमरतरु के, दुःख अनंते भरपूरे।।
हाहाकार करूण क्रंदन कर, रोया नाथ! बहुत विलखा।
वहाँ न कोई रक्षक मेरा, सभी दुःख इकला सहता।।6।।

मनुजगती में दीन दरिद्री, हीन अंग हो दुखी हुआ।
इष्ट वियोग, अनिष्ट योग से, शोकातुर हो रुदन किया।।
कुछ शुभ संचित यदी किया मैं, देवगती में जन्म लिया।
देख देख वैभव अन्यों का, मन के दुख से दुखी हुआ।।7।।

मरते क्षण संक्लेश भाव धर, एकेन्द्रिय में कूद गया।
पुनः उसी विध पंच परावर्तन सागर में डूब गया।।
कहूँ कहाँ तक नाथ! कहानी, बहुत पुरानी बहुत बड़ी।
तुम तो सभी जानते भगवन्! शरण लिया मैं धन्य घड़ी।।8।।

अब मैंने सम्यक् निधि पाई, भव भ्रमणों का अंत किया।
तुम सम ही मैं भी हूँ भगवन्! ज्ञान स्वरूपी जान लिया।।

अनंत दर्शन ज्ञान ज्योतिमय, अनंतसुख शक्तीशाली।
कर्मों ने ही प्रभु तुम मुझमें, अंतर डाल दिया भारी।।9।।

तुम त्रिभुवनपति न्याय धुरंधर, ऐसा सुन मैं शरण गही।
दुष्ट कर्म को शीघ्र निकालो, मेरी रक्षा करो सही।।
हे प्रभु! बोधि समाधी देवो, मम परिणाम विशुद्ध करो।
मेरी रत्नत्रय संपत्ती, मूझको दे संतुष्ट करो।।10।।

–सोरठा–

मैं नित पूजूँ साधु, गणधर चरण सरोज को।
''ज्ञानमती'' निधि साध, ऋद्धि सिद्धि पाऊँ स्वयं।।

ॐ ह्रीं नवविधचारणऋद्धिभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-6

तपऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना–अडिल्ल छंद–

चउ आराधन आराधें योगीश्वरा।
सप्त परम स्थान पावते श्रुतधरा।।
सात ऋद्धि तप की तपबल से पावते।
उनकी पूजा करते हम शिर नावते।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–स्रग्विणी छंद–

पद्मद्रह नीर शीतल सुगंधित लिया।
ऋद्धियों को जजत तीन धारा किया।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध से योगि पादाब्ज को चर्चते।
देह ही दाह मेटूं तुम्हें अर्चते।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।2।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों के सदृश शालि के पुंज से।
पूजहूँ आपको सौख्य पूरो अबे।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।3।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिका पारिजातादि चुन के लिये।
पुष्प अर्पण करत कीर्ति सौरभ किये।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियाँ मोदकादी भरे थाल में।
पूजते आत्मतृप्ती सु तत्काल में।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।5।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कर्पूर ज्योती तमो वारती।
आरती से भरे ज्ञान की भारती।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।6।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी उठे अभ्र में।
कर्म भस्मी हुये सौख्य हो स्वात्म में।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।7।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।
मोक्ष की आश पूरो प्रभो शीघ्र मे।।
सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।8।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में रत्न धर के चढ़ाऊँ प्रभो।
रत्नत्रय दीजिये शीघ्र ही हे विभो।।

सात तप ऋद्धियों को जजूँ भाव से।
दुःखसागर तिरूँ भक्ति की नाव से।।9।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपःऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

ऋद्धिमंत योगीन्द्र के, पद में धार करंत।
तिहुंजग में भी शांति हो, भवदुख का हो अंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपा जुही गुलाब ले, पुष्पांजलि विकरंत।
सर्व सौख्य संपति बढ़े, क्रम से शिवतिय कंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा–

नानाविध तप ऋद्धि, तपश्चरण से हों प्रगट।
मिले निजातम सिद्धि, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्।

–शंभु छंद–

तप ऋद्धि के हैं सात भेद, उनमें हि उग्र तप पहला है।
दीक्षा उपवास आदि करके मरणांत काल तक चलता है।।
एकेक उपवास अधिक करते जीवन भर बढ़ता तप करते।
उस उग्र तपस्या ऋद्धी को, हम पूजत ऋद्धि सिद्धि वरते।।1।।

ॐ ह्रीं उग्रतपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला आदिक उपवास करे, जब ऋद्धि दीप्त तप हो जाती।
आहार[1] न हो बल तेज बढ़ें, नहिं होती उन्हें भूख व्याधी।।
यह इस ऋद्धी का ही प्रभाव, तनु में बल मांस रुधिर वृद्धी।
मैं पूजूँ अतिशय भक्ती से, इससे दिन पर दिन हो दीप्ती।।2।।

ॐ ह्रीं दीप्ततपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. धवला पु-9, पृ.-90।

जिस ऋद्धी से आहार ग्रहें, वह तपे लोह पर जल सदृश।
नीहार न हो मलमूत्र शुक्र आदिक धातू नहिं बने विविध।।
बल शक्ति बढ़े तप बढ़े सदा यह तप ऋद्धी कहलाती है।
इसको पूजूँ तप शक्ति बढ़े यह कर्म समुद्र सुखाती है।।3।

ॐ ह्रीं तप्ततपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अणिमादिक चारण आदिक, बहुती ऋद्धी से युक्त रहें।
मंदर पंक्ती सिंहनिष्क्रीडित आदिक उत्तम उपवास गहें।।
वो चार ज्ञानधारी ऋषिगण ही, महातपों ऋद्धी धारें।
इसको पूजें हम इस बल से नाना विध तप में मन धारें।।4।।

ॐ ह्रीं महातपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदिक बारह विध के तप उग्र उग्र जो करते हैं।
बहुहिंस्र जंतु से भरे वनों में, विचरें तनु से दुख सहते हैं।।
ज्वर से पीड़ित होकर भी जो आतापन आदि तप धारे हैं।
वे घोर तपो ऋद्धीधारी उन पूजत हम भव पारे हैं।।5।।

ॐ ह्रीं घोरतपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि घोर पराक्रम ऋद्धी से अतिशायी शक्ती पाते हैं।
त्रिभुवन संहारकरण जलधी शोषण में समरथ होते हैं।।
यद्यपि ये कार्य नहीं करते फिर भी बहुती सामर्थ्य धरें।
तप बल से ऐसी ऋद्धि हुई जिसको पूजत हम ताप हरें।।6।।

ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अघोर यानी पूर्ण शांत, महाव्रत समिती गुप्ती पालें।
वे व्रतमय ब्रह्मा में चरते अघोर ब्रह्मचर्या पालें।।
इनसे दुर्भिक्ष कलह वध रोग वैर आदिक टल जाते हैं।
इस ऋद्धि अघोर ब्रह्मचारी को जजत ब्रह्मपद पाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपः ऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-शंभु छंद–

मुनि उग्र-उग्र तप कर-करके, तनु को अतिशय कृश करतेहैं।
पर आत्मशक्ति को बढ़ा-बढ़ा, गुणमणि की वृद्धी करते हैं।।

उन दीप्त तप्त आदिक तप युत, मुनियों की अर्चा गुणकारी।
हम भी तप की शक्ति पावें, मम इच्छा पूर्ती हो सारी।।8।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपः ऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं तपःऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

गणपति मुनिपति श्रुतधरा, महातपस्वी साधु।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ समरस स्वाद।।1।।

–शेर छंद–

गुरुदेव! आप ही समस्त दोष दूर हो।
गुरुदेव! आप ही समस्त सौख्य पूर हो।।
निज आत्मा को आप अंतरातमा किया।
निज में ही आप मग्न हो निजधाम पा लिया।।2।।

रागादि शत्रुओं का आपने दमन किया।
संपूर्ण कषायों को आपने शमन किया।।
इंद्रिय विषय को जीत अतीन्द्रिय सुखी हुये।
प्रत्यक्ष ज्ञान पावेक आप केवली हुये।।3।।

संपूर्ण उपद्रव टले हैं आप जाप से।
संपूर्ण मनोरथ फले हैं आप नाम से।।
प्रभु आपको न इष्ट का वियोग हो कभी।
होवे नहीं अनिष्ट का संयोग भी कभी।।4।।

सबके आराध्य इष्ट आप ही कहे।
सब ही अनिष्ट नष्ट हों क्षणमात्र ना रहें।।
संपूर्ण रोग शोक भी तुम भक्त के टलें।
धन धान्य अतुल सौख्य भी होवें भले भले।।5।।

इस जग में मुक्ति अंगना के नाथ आपही।
निज के अनंत ऋद्धियों के साथ आपही।।
चैतन्य चमत्कार परम सौख्य धाम हो।
चिर्त्पिड हो अखंड हो त्रिभुवन ललाम हो।।6।।

नाना तपश्चरण से काय शक्ति वृद्धि हो।
नाना तपश्चरण से दीप्त ऋद्धि वृद्धि हो।।
तपबल से सर्व कर्म भी निर्जीर्ण कर दिया।
हे नाथ! आपने ही सर्व शक्ति पा लिया।।7।।

मैं आपकी शरणागती में आज आ गया।
अपनी अमूल्य ज्ञानकला को भी पा गया।।
ये ज्ञाननिधी भवदधी में डूब ना जावे।
करिये कृपा जो मुक्ति तक भी साथ में आवे।।8।।

हे नाथ! तनु ममत्व को अब दूर कीजिये।
निजके अखंड गुण समस्त पूर्ण कीजिये।।
मुझ शत्रु मोह है इसे अब चूर कीजिये।
मुझ आत्म सुधारस प्रवाह पूर कीजिये।।9।।

–दोहा–

आत्यंतिक सुख शांतिमय, श्रीगणधर भगवान।
''ज्ञानमती'' लक्ष्मी मुझे, दे कीजे धनवान्।।10।।

ॐ ह्रीं सप्तविधतपः ऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-7

बलऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना–गीता छंद–

मन वचन तन का करें निग्रह आत्म अनुग्रह नित करें।
वे साधु त्रिकरण शुद्धि कर निज आत्म को पावन करें।।
मनबल बचनबल कायबल की ऋद्धि को प्रगटित करें।
उन साधु का आह्वानन कर निज शक्ति को विकसित करें।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक--लक्ष्मीधरा छंद–

तीर्थवारी महास्वच्छ झारी भरी।
ऋद्धिधर साधु के पाद धारा करी।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण द्रव के सदृश कुंकुमादी लिये।
राग की दाह को मेटने पूजिये।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मी सदृश श्वेत अक्षत लिये।
आत्मनिधि पावने पुंज रचना किये।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार मल्ली सुमन ले लिये।
मारहर योगि पादाब्ज में अर्पिये।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूझिया औ तिकोने भरे थाल में।
भूख व्याधी हरो नाथ पूजूँ तुम्हें।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्वलित दीप लेके करूँ आरती।
चित्त में प्रगटती ज्ञान की भारती।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
मोह शत्रू जलें आप पद सेवते।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम नींबू नरंगी व अंगूर हैं।
पूजते आत्म पीयूष को पूर है।।
तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि ले स्वर्ण थाली भरूँ।
साधु पद पूजते सर्व सिद्धी वरूँ।।

तीन बलऋद्धि अर्चा करूँ भक्ति से।
सर्वशक्ती मिले भक्ति की युक्ति से।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

ऋद्धिमंत योगीन्द्र के, चरणों धार करंत।
सब जग में भी शांति हो, रोग शोक का अंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपा जुही गुलाब ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
सर्व सौख्य संपति बढ़े, मिले भवोदधि अंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–सोरठा–

मन वच तन से शुद्ध, त्रय बल ऋद्धी को नमूँ।
मम आत्मा हो शुद्ध, पुष्पांजलि कर पूजते।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–चौपाई–

बल ऋद्धी के तीन प्रकारा, मनबल ऋद्धि मनोबल धारा।
दोय घड़ी में सब श्रुत चिंते, उन पूजत मनबल को सिंचे।।1।।

ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीन कंठ नहिं श्रम नहिं होवे, सब श्रुत उच्चारण कर लेवें।
यही वचन बल ऋद्धि विशेषा, जजत मिले वचसिद्धि अशेषा।।2।।

ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कायोत्सर्ग करें बहु भेदा, त्रिभुवन उठा सकें बिन खेदा।
कायबली अतिशायी ऋद्धी, पूजत हो मुझ शक्ति समृद्धी।।3।।

ॐ ह्रीं कायबलऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद–

जो रत्नत्रयधारी मुनी, वे ही स्वमन को वश करें।
नित मौन धर वचगुप्ति पालें, काय आसन थिर करें।।
उन साधु के मन वचन तन का बल बढ़े स्वयमेव ही।
हम उन गुरु को पूजते, निज शक्ति प्रगटन हेतु ही।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिविधबलऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं बलऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

–गीता छंद–

जय जय जिनेश्वर केवली, अघहरण जग चूड़ामणी।
जय जय गणेश्वर ऋद्धिधर, चिंतित फलें चिंतामणी।।
जय जय मुनीश्वर त्रयबली, त्रैलोक्य एक शिखामणी।
जय मोह अहि के विष प्रहारण, नाथ! तुम गारुत्मणी।।1।।

बाहूबली भगवान निश्चल, कायबल वरऋद्धियुत।
जो एक वत्सर तक खड़े ध्यानस्थ अविचल भूमिभृत।।
बाली मुनी ने तप किया तब कायबल ऋद्धी मिली।
कैलाशपर्वत को दबाया रो पड़ा दशमुख बली।।2।।

बहु देव देवी अप्सरायें, इन्द्रगण भी आवते।
मुनिवंदना गुणगान पूजन, करत शीश नमावते।।
संगीत बाजे विविध बजते किंकणी घंटा खने।
वीणा बजाते नृत्य करते ताल दे देकर घने।।3।।

खेचर युगलियां भक्ति से मुनिवंदना करते वहाँ।
नर नारियाँ भूचर सदा विद्या के बल फिरते वहाँ।।
मनबलि वचनबलि कायबलि, ऋषिगण जहाँ विचरण करें।
उस भूमिरज मस्तक धरें, बहुजन्म पातक परिहरें।।4।।

गणधर सुव्रतधर चक्रधर हलधर, गदाधर सर्वदा।
श्रुतधर अशनिधर कुलधरा, तप संस्तवन करते मुदा।।
अध्यात्म योगी वीतरागी, शुद्ध आतम ध्यावते।
वर निर्विकल्प समाधिरत हो परम आनंद पावते।।5।।

मैं भक्ति श्रद्धा भाव से हे नाथ! तुम शरणा लिया।
बस स्वात्म शक्ती प्राप्ति हेतू तु निकट धरना दिया।।
हे भक्तवत्सल! दीनबंधो! कृपा मुझ पर कीजिये।
हे नाथ! अब तो मुझे केवल, ''ज्ञानमति'' श्री दीजिये।।6।।

–दोहा–

जिनवर गणधर साधुवर, नमूँ नमूँ नत शीश।
मन वच तन शुद्धी करो, यही प्रार्थना ईश।।7।।

ॐ ह्रीं मनोबलवचनबलकायबल ऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-8

औषधि ऋद्धि पूजा

-अथ स्थापना (गीता छंद)-

अट्ठाइस मूलगुणों से युत रोगादि परीषह के विजयी।
उन मुनि के औषधि ऋद्धि प्रगट होती वे ही कर्मारिजयी।।
सब रोग शोक दारिद्र नशें इन गुरु की पूजा करने से।
ये औषधि ऋद्धी आठ भेद आह्वानन कर पूजूँ रुचि से।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविध औषधिऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अष्टविध औषधिऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अष्टविध औषधिऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अथ अष्टक (चाल-शेर)-

गुरुदेव! आप पाद में त्रयधार मैं करूँ।
निज चित्त ताप शांति हेतु आश मैं धरूँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! आप चर्ण में चंदन विलेपते।
संपूर्ण ताप नष्ट हों निज तत्त्व लोकते।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! आप अग्र शालि पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अखंड सौख्य हेतु आश लगाऊँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! आप चर्ण पुष्पमाल चढ़ाऊँ।
संपूर्ण सौख्य पाय देह कांति बढ़ाऊँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! आप सामने नैवेद्य चढ़ाऊँ।
उदराग्नि को प्रशमित करूँ निज शक्ति बढ़ाऊँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! दीप लेय आप आरती करूँ।
अज्ञान तिमिर नाश ज्ञान भारती भरूँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टविध औषधिऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूपघट में धूप खेय कर्म जलाऊँ।
गुरुदेव! आप भक्ति से सम्यक्त्व को पाऊँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! श्रेष्ठ फल चढ़ाय अर्चना करूँ।
चारित्र लब्धि पाय दुख रंच ना भरूँ।।
औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरुँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव! अर्घ लेय रजत पुष्प मिलाऊँ।
निजात्म सौख्य प्राप्त हेतु अर्घ्य चढ़ाऊँ।।

औषधि महान आठ ऋद्धि चित्त में धरूँ।
सब रोग शोक आधि व्याधि वेदना हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

साधु पाद पंकेज, जल से त्रय धारा करूँ।
अतिशय शांती हेतु, शांती धारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले आत्मसुख लाभ, गुरुपद पंकज सेवते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

भव्यजनों को सुख करें, गणधर गुरु भगवान।
पुष्पांजलि कर पूजते, नशें सर्व दुर्ध्यान।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–पद्धड़ी छंद–

औषधि ऋद्धी के आठ भेद, आमर्शौषधि यह ऋद्धि एक।
जिन तनुस्पर्श से हो निरोग, यह ऋद्धि जजूँ सब हरे शोक।।1।।

ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके कफ थूक व लार आदि, तप बल औषधि हों हरें व्याधि।
खेलौषधि ऋद्धि जजूँ महान, जिससे तनु होता सुख निधान।।2।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तनु स्वेद जल्ल तनुमल कहाय, तपबल से औषध रूप थाय।
सब रोग हरें भक्ती करंत, हम पूजें हो तनुरोग अंत।।3।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके जिह्वा कर्णादि मैल, सब रोग हरें हो सौख्य मेल।
यह ऋद्धि मलौषधि जो धरंत, उन पूजत हम भवदधि तरंत।।4।।

ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस ऋद्धी से मलमूत्र आदि, भक्तों की हरते सकल व्याधि।
उस ऋद्धी को जो नित यजंत, वे सर्व ऋद्धि के बने कंत।।5।।

ॐ ह्रीं विप्रुषौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे स्पर्शित नीर वायु, सब रोग हरें करते चिरायु।
यह सर्वौषधि ऋद्धि महान, मैं जजूँ यही है सौख्य खान।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिससे कटु या विष व्याप्त अन्न, बस वचन मात्र से निर्विषान्न।
मुनि वच सुनते नर व्याधि मुक्त, मुखनिर्विष ऋद्धी जजूँ शुद्ध।।7।।

ॐ ह्रीं मुखनिर्विषऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो रोग विषादि समेत जीव, अवलोकन से हों स्वस्थ जीव।
दृष्टी निर्विष ऋद्धी महात्म्य, मैं जजूँ मिले निज सौख्य साम्य।।8।।

ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–कुसुमलता छंद–

नाना विध तप तपते मुनि का, तन भी औषधि रूप बने।
तनु संस्पर्शित हवा लगत ही, नश जाते सब रोग घने।।
ऐसे गणधर ऋषिवर गुरु को, वँदूँ शीश झुका करके।
अर्घ चढ़ाकर रुचि से पूजूँ, मन की भ्रांति दूर करके।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

मुनिगण वैयावृत्ति से, मिलती औषधि ऋद्धि।
उन औषधि ऋद्धीश को, नमत सौख्य अभिवृद्धि।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय गुरुवाणी कल्याणी, गंगाजल से भी शीतल है।
जय जय शमगर्भित अमृतमय, हिमकण से भी अतिशीतल है।।
चंदन औ मोतीहार चन्द्रकिरणों से भी शीतलदायी।
स्याद्वादमयी जिन दिव्यध्वनी, मुनिगण को अतिशय सुखदायी।।2।।

वस्तू में धर्म अनंत कहे, उन एक एक धर्मों को जो।
यह सप्तभंगि अद्भुत कथनी, कहती है सात तरह से जो।।
प्रत्येक वस्तु में विधि निषेध, दो धर्म प्रधान गौण मुख से।
वे सात तरह से हो विर्णित, नहिं भेद अधिक अब हो सकते।।3।।

प्रत्येक वस्तु में अस्तिरूप, औ नास्तिरूप भी है वो ही।
वो ही उभयरूप समझो, फिर अवक्तव्य भी है वो ही।।
वो अस्तिरूप औ अवक्तव्य, फिर नास्ति अवक्तव्य भंग धरे।
फिर अस्ति नास्ति औ अवक्तव्य, ये सात भंग हैं खरे खरे।।4।।

स्व द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव, इन चारों से वह अस्तिमयी।
पर द्रव्य क्षेत्र कालादिक से, वो ही वस्तू नास्तित्व कही।।
दोनों को क्रम से कहना हो, तब अस्ति नास्ति यह भंग कहा।
दोनों को युगपत् कहने से, हो अवक्तव्य यह तुर्य कहा।।5।।

अस्ती औ अवक्तव्य क्रम से, यह पंचम भंग कहा जाता।
नास्ती औ अवक्तव्य छट्ठा, यह भी है क्रम से बन जाता।।
क्रम से कहने से अस्ति नास्ति, औ युगपत अवक्तव्य मिलके।
यह सप्तम भंग कहा जाता, बस कम या अधिक न हो सकते।।6।।

इस स्प्तभंगमय गंगा में, जो नित अवगाहन करते हैं।
मानस शारीरिक सर्व व्याधि, को क्षण में ही परिहरते हैं।।
वे अनेकांतमय वाक्य सुधा, पीकर आतमरस चखते हैं।
जिनवच औषधि से परम स्वास्थ्य, पाकर शाश्वत सुख लभते हैं।।7।।

मैं निज अस्तित्व लिये हूँ नित, मेरा पर से अस्तित्व नहीं।
मैं चिच्चैतन्य स्वरूपी हूँ, पुद्गल से मुझ नास्तित्व सही।।
इस विध निज को निज के द्वारा, निज में ही पाकर रम जाऊँ।
निश्चयनय से सब भेद मिटा, सब कुछ व्यवहार हटा पाऊँ।।8।।

भगवन! कब ऐसी शक्ति मिले, श्रुतदृग से निज को अवलोकूँ।
फिर स्वसंवेद्य निज आतम को, निज अनुभव द्वारा मैं खोजूँ।।
संकल्प विकल्प सभी तजके, बस निर्विकल्प मैं बन जाऊँ।
फिर केवल ''ज्ञानमती'' से ही, निज को अवलोकूँ सुख पाऊँ।।9।।

–दोहा–

औषधि ऋद्धी पूजते, रोग शोक दुख दूर।
मन वच तन भी स्वस्थ हो, मिले स्वात्मसुख पूर।।10।।

ॐ ह्रीं अष्टविधऔषधिऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-9

रस ऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना (चौबोल छंद)–

जिन मुनियों ने नाना विध रस, परित्याग तपधारा है।
उनके ही रस ऋद्धी प्रगटती, गुरु ने यही उचारा है।।
विष भी अमृत करने वाले, ऐसे गुरु को नित्य जजूँ।
आह्वानन स्थापन करके, परमानंद पियूष भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (स्रग्विणी छंद)–

पांच पापादि मल धो लिया आपने।
नीर से मैं जजूँ स्वात्म मल धोवने।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व संताप को नाशिया आपने।
गंध से पूजहूँ शांतिकर पाद मैं।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म सौख्याब्धि में आप अवगाहते।
शालि से जो जजें सर्वसुख पावते।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम शर जीत के आप जिष्णू बने।
कल्पतरु के सुमन लेय अर्चूं तुम्हें।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदना भूख की ना कभी छोड़ती।
यदि चरु से जजें शीघ्र मुख मोड़ती।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।5।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधेर हन ज्ञान ज्योती धरें।
दीप से पूज हम ज्ञान ज्योती भरें।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।6।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को खेवते कर्म ईंधन जले।
आपके पाद ही सर्व तीरथ भले।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।7।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रियों के विषय छोड़ निज सुख लिया।
आपको फल चढ़ा स्वात्मरस चख लिया।।
षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।8।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यादि से अर्घ सुंदर लिया।
आपको अर्चते पाप सब क्षय किया।।

षट् विधा ऋद्धि रस की जजूँ भाव से।
साम्यरस को चखूँ स्वात्मसुख चाव से।।9।।

ॐ ह्रीं षड्विधरसऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

गुरु के पद पंकेज, जल से त्रयधारा करूँ।
अतिशय शांती हेत, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले आत्मसुख लाभ, गुरु पद पंकज सेवते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

तिहुंजग में सुख विस्तरें, गणधर गुरु महंत।
सर्व विघ्न को परिहरें, पुष्पांजलि अर्पंत।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–स्रग्विणी छंद–

ऋद्धि रस के छहों भेद में एक है।
ऋद्धी आशीविषा बस "मरो" ये कहे।।
वो मरे शीघ्र ही ऋद्धि ये दुःखदा।
ना प्रयोगें इसे साधु पूजूं सदा।।1।।

ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टि विष ऋद्धि से रोष से देखते।
जन मरें शीघ्र ही साधु के कोप से।।
ना प्रयोगें इसे साधु करुणा धरें।
पूजहूँ ऋद्धि यह शक्ति तप की भरें।।2।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्ततल पे रखा रुक्ष आहार भी।
क्षीरवत् परिणमें ऋद्धि बल से सभी।।
उन वचन भी सदा क्षीरवत् गुण भरें।
क्षीरस्रावी जजें ऋद्धि पुष्टी धरें।।3।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्त तल में रखे रूक्ष भोज्यादि को।
मिष्ट मधुवत् करे ऋद्धि मधुस्रावि जो।।
उन वचो भी मधुर मिष्ट सीतल करें।
पूजहूँ ऋद्धि ये सर्व सुख को भरें।।4।।

ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृतास्रावि विष वस्तु अमृत करें।
उन वचन दुःख हर कर्ण अमृत भरें।।
अमृतास्रावि ऋद्धी जजूँ भक्ति से।
स्वात्म अमृत पिऊँ आपकी भक्ति से।।5।।

ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्त तल में रखा रुक्ष भोज्यादि भी।
घी सृदश परिणमें ऋद्धि बल से सभी।।
दिव्य वच भी सदा पुष्टि तुष्टी करें।
पूजहूँ ऋद्धि को सर्व शांती धरें।।6।।

ॐ ह्रीं सर्पिःस्राविऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभुछंद–

जिह्वा इंद्रिय को वश करके, नीरस व रुक्ष आहार करें।
तन शुष्क भले ही हो जावे, निज आतम शक्ति विकास करें।।
ऐसे मुनियों को नित्य जजूँ, सब रस ऋद्धी को भी पूजूं।
नित आत्म सुधारस को पीकर, भव भव के बंधन से छूटूं।।7।।

ॐ ह्रीं षट्विधरसऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं रसऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

–दोहा–

जो रस त्यागें प्रीति से, वे रसऋद्धि धरंत।
ऐसे मुनियों को नमत, निज समरस छलकंत।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय तीर्थंकर शिव सुखकर, जय जय गणधर गुणसागर हो।
जय जय रसऋद्धि सहित मुनिवर, जय जय गुणमणि रत्नाकर हो।।
तुमने मृत्युंजय बनने का, सबको सुखकर उपदेश कहा।
जिसने तुम आज्ञा को पाला, उसने मृत्यु का क्लेश दहा।।2।।

संन्यास विधी के तीन भेद, जो पंडित मरण कहे जाते।
प्रायोपगमन इंगिनीमरण, औ भक्तप्रतिज्ञा कहलाते।।
जिसमें निज से पर के किंचित् उपकार नहीं वह पहला है।
जिसमे निज से वैयावृत्ती, पर से नहीं वह मंझला है।।3।।

जो श्रेष्ठ संहनन के धारी, वे ही इनको कर सकते हैं।
हैं आज हीन संहनन तीन, इसलिये नहीं बन सकते हैं।।
बस भक्त प्रतिज्ञा का आश्रय, इस युग में मुनिगण लेते हैं।
बारह वर्षों की उच्च अवधि, लेकर ही विधिवत् सेते हैं।।4।।

अड़तालिस मुनि परिचर्या रत, निर्यापक बन सेवा करते।
वह क्षपक मुनी संन्यास निरत, होकर जिनवचनों से वर्तें।।
क्रम क्रम से भोजन त्याग करें, वे अंतसमय जल भी छोड़ें।
तन से बिल्कुल निर्मम होकर, आतम से ही नाता जोड़ें।।5।।

सबसे ही क्षमा कराकर पुनि स्वयमेव क्षमा परिणाम धरें।
संपूर्ण कषायों को तजकर, उत्तम सल्लेखन मरण करें।।
इस विध कषाय औ काय, उभय को कृश करते तनु को छोड़ें।
वे सात आठ भव से ज्यादा, नहिं लें यम की फांसी तोड़ें।।6।।

भगवन्! तुम भक्ती से ऐसी, शक्ती मुझमें भी आ जावे।
संन्यास विधी से मरण करूँ, बस पुनर्जन्म सब नश जावे।।
मैं मृत्यू को उत्सव समझूँ, समतारस अमृत को पीऊँ।
क्षुध आदि व्याधि से खेद न हो, अपने में अनुभव रस पीऊँ।।7।।

बचपन से लेकर अब तक जो, मैंने पुण्यार्जित किय सही।
उन सबका फल एकत्रित हो, प्रभु मुझे चाह बस एक यही।।
जब प्राण प्रयाण करें मेरे, मम कंठ अकुंठित बना रहे।
तुम नाम मंत्र अंतिम क्षणतक, मेरी जिह्वा पर चढ़ा रहे।।8।।

–दोहा–

अमृतस्रावी आदि मुनि, परमामृत सुख देत।
नमूँ नमूँ उन पदकमल ''ज्ञानमती'' निधि हेतु।।9।।

ॐ ह्रीं षट्विधरसऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं.-10

अक्षीणऋद्धि पूजा

–अथ स्थापना (शंभु छंद)–

जो मुनि उदारमन हो करके, सब जन के बंधू बनते हैं।
बहु भेद तपश्चर्या करके, अक्षीण ऋद्धि को लभते हैं।।
उनकी चरणांबुज की पूजा से जन सर्व समृद्धि करते हैं।
जो विधिवत् पूजें गुण गावें, उनके मनवांछित फलते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (शंभु छंद)–

क्षीरोदधि का शुचि जल लेकर, गुरु चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव भव का कलिमल धोने को, श्रद्धा से अति हरषाया हूँ।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।1।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कुंकुम गंध लिये, गुरु चरण चढ़ाने आया हूँ।
मोहारि ताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आया हूँ।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।2।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरांबुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धो करके लाया हूँ।
क्षय विरहित अक्षयसुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।3।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाया हूँ।
मदनारिजयी तव चरणों में, मैं अर्पण करने आया हूँ।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।4।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली खाजे ताजे, सेमई खीर बहु लाया हूँ।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।5।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञान ज्योति निज में भासे।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।6।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।7।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूरों के, गुच्छे अति सरस मधुर लाया।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर सुख पाया।।
अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।8।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलचंदन अक्षत पुष्प चरु, वरदीप धूप फल अर्घ्य लिये।
रत्नत्रयनिधि पाने हेतू, गुरुचरणों अर्घ्य समर्प्य किये।।

अक्षीण ऋद्धिधारी मुनिवर की पूजा अक्षय निधिदाता।
द्वयविध ऋद्धी को भी पूजूँ, जिससे होवे निज सुख साता।।9।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

परम शांति के हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
विश्वशांति के हेतु, चउ संघ में भी हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
भरे सौख्य भंडार, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ

–दोहा–

गणधर गुरुवर के चरण, विघ्नहरण शोभंत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले स्वात्म आनंद।।1।।

इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–भुजंग प्रयात-छंद–

कहे ऋद्धि अक्षीण के भेद दो हैं।
मुनी लेंय आहार जिस गेह में हैं।।
भले चक्रवर्ती कटक जीम लेवे।
जजूँ ऋद्धि जिससे नहीं अन्न छीवे।।1।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धनुष चार ही हो चतुष्कोण भूमी।
असंख्ये दिविज नर पशू बैठते भी।।
सु अक्षीण आलय महा ऋद्धि पूजूं।
मिले शक्ति ऐसी सभी ऋद्धि लूटूँ।।2।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

तप बल से अशन व आलय को, अक्षीण विशाल बना देते।
ऐसे ऋद्धीधारी ऋषिवर, सब जग में शांति, लुटा देते।।
उन गुरुओं को अरु ऋद्धी को, नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ।
अक्षीण सौख्य संपत्ति मिले, निज आत्मा में ही रम जाऊँ।।3।।

ॐ ह्रीं द्विविध अक्षीणऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो बुद्धि विक्रिया और क्रिया चारण तप बल औषध रस युत।
अक्षीण इन्हीं आठों के चौंसठ भेद सभी ऋद्धी से युत।।
ये गणधर गुरु ही होते अन्य, मुनी कतिपय ऋद्धी धारें।
उन गुरुओं को सब ऋद्धी को पूजूँ मुझ सौख्य मिलें सारे।।4।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य–**ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धिभ्यो नमः।**

जयमाला

तर्ज-आवो बच्चों तुम्हें दिखायें.....।

आवो हम सब करें अर्चना, तीर्थंकर भगवान की।
जो अक्षीण महानस ऋद्धी, धारी उन गुणवान की।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

ऋषभदेव ने हस्तिनापुर में, इक्षूरस आहार लिया।
कोड़ाकोड़ी सागर तक भी, इक्षु यहाँ वरदान हुआ।।
अधिक ऋद्धियाँ तीर्थंकर में, स्वयं प्रगट होती दिखतीं।
गणधर गुरु में सर्व ऋद्धियाँ, एक साथ भी हो सकतीं।।
तप से मुनि को ऋद्धी प्रगटे, पूजा साधु पधान की।।आवो.।।1।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

समवसरण में एक साथ सब तीन लोक के भव्य रहे।
मुनि अक्षीण महालय धारी, जहाँ बैठे बहु भक्त रहें।।

असंख्यात भी देव देवियाँ, वहाँ बैठें गुरु भक्ति करें।
यह प्रभाव इस ऋद्धी का ही, सब जन मैत्री भाव धरें।।
जो पूजें वे ऋद्धी पावते, इन मुनिराज महान की।।आवो.।।2।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण से, निज आत्मा को शुद्ध करें।
ऐसे मुनिगण तपश्चरण से, ऋद्धि सिद्धि को प्राप्त करें।।
केवलज्ञानबुद्धि ऋद्धी को, पा करके अर्हंत बनें।
भव्यों को धर्मामृत देकर, कर्मनाश कर सिद्ध बनें।।
भक्ति वंदना पूजा अर्चा, होती कृपानिधान की।।आवो.।।3।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

ग्रीष्मकाल में पर्वत ऊपर, वर्षाऋतु में वृक्ष तले।
शीतकाल में नदी किनारे, तप करते मुनि खड़े खड़े।।
वन के हिंसक पशु पक्षी भी, प्रेम भाव से गले मिलें।
परमशांति मुनि के प्रभाव से, षट् ऋतु के फल फूल खिलें।।
इन मुनियों की पूजा करते, मिले राह निर्वाण की।।आवो.।।1।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

पाँच कोटि अड़सठ लक्षा निन्यानवे हजार पाँच सौ।
चौरासी ये कही व्याधियाँ, नरक धरा में प्रगटित हों।।
मानव तन में भी अगणित ही, रोग उदय आ दुख देते।
ऋद्धिमंत मुनिवर वंदन से, सर्व रोग क्षण में नशते।।
गणधर गुरु की पूजा करते, मिले बुद्धि कल्याण की।।आवो.।।5।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

मैंने मोहमहामदिरा पी, काल अनंत बिताया है।
बड़े भाग्य से हे भगवन्! अब, दर्श आपका पाया है।।
सम्यग्दर्शन रत्न प्राप्त कर, मालामाल हुआ हूँ मैं।
ज्ञान और चारित्ररत्न भी, दे दीजे यह इच्छा मे।।
तीन रत्न से ही मिल जाती, शिवकन्या शिवराम की।।आवो.।।6।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

जैसे धर्मात्मा जन के बिन, रह सकता है धर्म नहीं।
वैसे मुनियों के बिन ऋद्धी रह सकती भी कहीं नहीं।।
इसीलिये, ऋद्धी पूजा में, गणधर मुनिगण की पूजा।
तीर्थंकर भी महा ऋद्धिधर, इन सम नहीं अन्य दूजा।।
इन सबकी पूजा करते ही, मिले ऋद्धि निज आत्म की।।आवो.।।7।।
जय जय जिनवरं....।।4।।

-दोहा-

बहुविध ऋद्धि समेत मुनि, गुण अनंत से युक्त।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, होऊँ कर्म विमुक्त।।8।।

ॐ ह्रीं द्विविधअक्षीणऋद्धिभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

-चौबोल छंद-

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।

।।इत्याशीर्वादः।।

गणधर वलय स्तुति

अन्त्य जयमाला

–पद्यानुवाद-दोहा–

जिनवर गणधर साधुगण, ऋद्धि सिद्धि केनाथ।
सर्वविघ्नहर्ता इन्हें, नमूँ नमाकर माथ।।1।।

–चौबोल छंद–

जीता अंतः शत्रूगण को, ''जिन'' कहलाए गरिष्ठ भी।
देशावधि परमावधि सर्वावधि संयुत मुनिराज सभी।।
कोष्ठ बीज आदिक ऋद्धीयुत, पदानुसारी ऋद्धीयुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुणप्राप्ति हेतु संतत।।2।।

जो संभिन्नश्रोतृ ऋद्धीयुत, स्वयंबुद्ध मुनिनाथ महान्।
जो प्रत्येकबुद्ध संबोधित, बुद्धिसहित बहु ऋद्धीमान्।।
वे गणेश गुरुदेव विमुक्तीमार्ग, कहें साक्षात् महित।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।3।।

ऋजुमति विपुलमती मनःपर्यय, ज्ञानी मुनिपुंगव ध्यानी।
दशपूर्वी चौदशपूर्वी मुनि, श्रुतपारंगत शुभध्यानी।।
शुभ अष्टांग महानैमित्तिक, गुरुवर महाऋद्धिसंयुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।4।।

विक्रियऋद्धी महाप्रभावी, प्राप्त सुविघाकर ऋद्धी।
चारण ऋद्धीसंयुत प्रज्ञा, श्रमण करें प्रज्ञा ऋद्धी।।
नित आकाशगमन ऋद्धीयुत, विहरण करते वे संयत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।5।।

आशीविष ऋद्धी दृष्टीविष, ऋद्धि सहित मुनिराज महान्।
उग्र तपोयुत दीप्ततपोयुत, उत्तम तप्त तपोयुतमान्।।
महातपोयुत घोर तपोयुत, तपश्चरण ऋद्धी संयुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।6।।

सुरगण वंदित घोरगुणों युत, वरऋद्धीधारी मुनिगण।
बुधजन पूजित घोरपराक्रम, श्रेष्ठ ऋद्धिधारी यतिगण।।
घोरगुणादिक ब्रह्मचर्य ऋद्धीधर खेचरनुत संयत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।7।।

आमौषधि क्ष्वेललौषधि जल्लौषधि, विप्रुषऔषधि ऋद्धी।
सर्वौषधि ऋद्धी से सबकी, व्यथा हरें ये सब ऋद्धी।।
मनबल वचन बल कायबली, ऋद्धी से युत सुरगण संस्तुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।8।।

क्षीरस्रवी घृतस्रवी मधुरस्रावी, अमृतस्रावी ऋद्धी।
वर अक्षीणमहानसयुत, अक्षीणमहालय भी ऋद्धी।।
वर्धमान ऋद्धीयुत त्रिभुवन, पूज्य यतीगण जग से नुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।9।।

सिद्धायतन नमूँ मैं भगवन्, महति वीर अतिवीर महान्।
वर्धमान बुद्धी ऋद्धी में, दक्ष महाऋषिराज प्रधान।।
सभी श्रेष्ठ मुनि पुंगव ऋषिवर, मुक्ति वधूवर मुनिगण नुत।
सब गणधर की स्तुति करूँ मैं, उन गुण प्राप्ति हेतु संतत।।10।।

नरसुर खेचर गण से सेवित, सकल श्रेष्ठ ऋद्धी भूषित।
विविधगुणों के सागर, कामदेव गजहेतू सिंह सदृश।।
भवजलनिधि के लिए पोतसम, सिद्धिप्रदायक ऋद्धि धरें।
मुझसे वंदित श्रीसिद्धीप्रद, मुनिगण सकल प्रदान करें।।11।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरगणधरऋषिवरचरणेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–चौबोल छंद–

जो भविजन श्रद्धा भक्ति से, चौंसठ ऋद्धि विधान करें।
नवनिधि यश संपत्ति समृद्धी, अतुल सौख्य भंडार भरें।।
पुनरपि मुनि बन तपश्चरण कर, सर्वऋद्धियाँ पूर्ण करें।
केवल ''ज्ञानमती'' रवि किरणों, से अघतम निर्मूल करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

-चौबोल छंद-

तीर्थंकर प्रभु को वंदन कर, गणधर गुरु को नित्य नमूँ।
परम तपस्वी मुनिराजों को, चौंसठ ऋद्धि समूह नमूँ।।
महावीर प्रभु के शासन में, कुंदकुंद आचार्य हुये।
मूलसंघ में गच्छ सरस्वति, बलात्कारगण मान्य हुये।।1।।

इस आचार्य मणीमाला में, शांतिसागराचार्य हुये।
ये चारित्र चक्रवर्ती गुरु, इस युग मध्य प्रधान हुये।।
इनके प्रथम शिष्य उत्तम गुरु वीरसागराचार्य हुये।
मुझे आर्यिका दीक्षा देकर, ज्ञानमती वर नाम दिये।।2।।

सिद्धचक्र इन्द्रध्वज कल्पद्रुम विधान बहु ख्यात हुये।
चौंसठ ऋद्धि विधान बनाकर गणधर गुरु को नमन किये।।
महावीर निर्वाण सुसंवत्, पच्चिस सौ उन्नीस कहा।
पौष कृष्ण द्वितीया तिथि मैंने, यह विधान भी पूर्ण किया।।3।।

हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, रत्नत्रयनिलय वसतिका में।
जिनभक्ती आराधन करके, चाहूँ धर्मध्यान शुभ मैं।।
इसी हेतु पूजा रचना कर, हृदय कमल विकसाऊं मैं।
अंतिम क्षण तक नाममंत्र प्रभु का गाऊँ यह भाऊँ मैं।।4।।

जब तक जग में गणधर गुरु का, नाम रहे गुरु भक्त रहें।
तब तक जम्बूद्वीप सुमेरु, रचना यहाँ अखंड रहे।।
तब तक चौंसठ ऋद्धी पूजा, भक्तों में सुप्रसिद्ध रहे।
केवल ''ज्ञानमती'' ऋद्धी तक, मुझ मन में जिन भक्ति रहे।।5।।

।।इति शं भूयात्।।

गणधर स्वामी की आरती

तर्ज-तन डोले.....

जय जय ऋषिवर, हे ऋद्धीश्वर, की मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूं आरतिया।टेक.।।

तीन न्यून नव कोटि मुनीश्वर, ढाई द्वीप में होते।
घोर तपस्या के द्वारा, निज कर्म कालिमा धोते।।गुरू जी.।।
गणधर भी हैं, श्रुतधर भी हैं, इन मुनियों में सरताज वे
मैं आज उतारूं आरतिया।।1।।

वृषभसेन से गौतम तक हैं, तीर्थंकर के गणधर।
सबने ही कैवल्य प्राप्त कर, पाया पद परमेश्वर।।गुरू जी.।।
प्रभु दिव्यध्वनि, सुन करके मुनी, करते निज पर कल्याण है।
मैं आज उतारूं आरतिया।।2।।

गणधर के अतिरिक्त तपस्वी, मुनि की ऋद्धी पाते।
उनको नमकर नर नारी के, रोक शोक नश जाते।।गुरू जी.।।
अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा इत्यादि ऋद्धियां प्राप्त हैं।
मैं आज उतारूं आरतिया।।3।।

इन मुनियों के वंदन में, निज वंदन भी करना है।,
क्योंकि 'चंदनामती' मुझे भी, इक दिन शिव वरना है।। गुरू जी।।
ज्ञानी ध्यानी, श्रुत विज्ञानी, गुरू को वन्दन शत बार है।
मैं आज उतारूं आरतिया।।4।।

चौंसठ ऋद्धि व्रत विधि

चौंसठऋद्धि मंत्र की अपेक्षा चौंसठ व्रत करना चाहिए। व्रत के दिन उपवास करना उत्तम, अल्पाहार फल, दूध मेवा या जल आदि लेना मध्यम और एक बार शुद्ध भोजन करना जघन्य विधि है। प्रत्येक माह में अष्टमी, चतुर्दशी आदि किसी भी दिन व्रत कर सकते हैं। व्रत पूर्ण कर 'चौंसठ ऋद्धि मंडल विधान' करके शक्ति के अनुसार चौंसठ शास्त्र, उपकरण आदि मंदिर में रखें। अनेक प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि को प्राप्त करना, अनेक प्रकार के रोग, शोक, दुःख दारिद्र्य से छुटकारा पाना यह इसका फल है।

प्रत्येक मंत्र का समुच्चय मंत्र–ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिभ्यो नमः।

चौंसठ व्रतों के 64 मंत्र

चौंसठ ऋद्धि के 18 मंत्र

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं केवलज्ञानबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं बीजबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं पदानुसारिणीबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं संभिन्नश्रोतृत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दूरास्वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दूरदर्शित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वित्वबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्तबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं प्रज्ञाश्रमणबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं प्रत्येकबुद्धिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं वादित्वबुद्धिऋद्धये नमः।

विक्रिया के 11 मंत्र

ॐ ह्रीं अणिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं महिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं लघिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं गरिमाविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं प्राप्तिविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं प्राकाम्यविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं ईशत्वविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं वशित्वविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अप्रतिघातविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अंतर्धानविक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं कामरूपविक्रियाऋद्धये नमः।

चारणऋद्धि के 9 मंत्र

ॐ ह्रीं नभस्तलगामित्वचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं जलचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं जंघाचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं फलपुष्पपत्रचारणक्रियाऋद्धये नमः।

ॐ ह्रीं अग्निधूमचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मेघधाराचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं तंतुचारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं ज्योतिश्चारणक्रियाऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मरुच्चारणक्रियाऋद्धये नमः।

तपऋद्धि के 7 मंत्र

ॐ ह्रीं उग्रतपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दीप्ततपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं तप्ततपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं महातपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं घोरतपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं घोरपराक्रमतपःऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचारित्वतपःऋद्धये नमः।

बलऋद्धि के 3 मंत्र

ॐ ह्रीं मनोबलऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं वचनबलऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं कायबलऋद्धये नमः।

औषधिऋद्धि के 8 मंत्र

ॐ ह्रीं आमर्शौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं जल्लौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मलौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं विप्रुषौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं सर्वौषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मुखनिर्विषधिऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दृष्टिनिर्विषधिऋद्धये नमः।

रसऋद्धि के 6 मंत्र

ॐ ह्रीं आशीर्विषऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं दृष्टिविषऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं क्षीरस्राविरसऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं मधुस्राविरसऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अमृतस्राविरसऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं सर्पिस्राविरसऋद्धये नमः।

अक्षीणऋद्धि के 2 मंत्र

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धये नमः।
ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धये नमः।